आदिमानव
मैने सोच लिया बनरी। मैंने फैसला कर लिया है कि मैं कवि बनूंगा। जागरण के गीत लिखूंगा। जंगली आज सोये पड़े हैं। उन्हें जगाना होगा, मेरी कविताओं में आग होगी।
रोडीमल, तुमने फैसला कर लिया कि क्या करना है जिन्दगी में? मम्मी रोज पूछती रहती हैं। वह कह रही थीं कि देना सोर की खाल में भुस्स भरने का काम भी अच्छा है।
सचमुच! मम्मी कितनी खुश होंगी।

मैं कितनी भाग्यशाली हूं कि मुझे तुम जैसा जंगली प्रेमी मिला। तुम कवितायें लिख कर जंगल का उद्धार करना। मैं कदम-कदम पर तुम्हारा साथ दूंगी। सुअर और हिरन मैं मारुंगी, तुम बस बैठे कवितायें लिखते रहना।
ऐसा ही होगा! तुम्हीं मेरी प्रेरणा हो।

हाय! हाथ में पार्कर-५१ का घन पकड़ कर शिलाओं पर कविताओं की खुदाई करते तुम कितने अच्छे लगते हो जैसे कोई जंगली सिपाही डंडा लेकर गैंडे से लड़ रहा हो।
जागो हे जंगली भूत...

कम्बख्त जब से ये जंगली लौंडे कवितायें खोदने लगे हैं चैन से सोना नसीब नहीं हुआ। दिन-रात टौंक टौंक करके नींद भगाते हैं। कभी दिल करता है...

सचमुच जबसे तुमने गीत खोदने शुरु कर दिये जंगलियों की नींद हराम हो गयी। और तुम्हारे गीत में आग भी है। अंधेरी गुफा में शिलाओं की खुदाई करते समय कैसे चिन्गारियां निकलती हैं।

चंद्र शेकर जैन, भान तलैया, जबलपुर

प्र० गन्ने का रस, मुसम्मी का रस, टमाटर का रस आदि बाज़ार में चल रहे हैं, आपको कौनसा रस पसंद है ?

उ० वीर, करुण, श्रृंगार-रस, सब फल-रस बेकार।
पर निंदा-रस पीजिए, बनकर टीका कार।।

राधश्याम पाहवा, राजेंद्रनगर, दिल्ली

प्र० दिल काबू स बाहर कब हा जाता है ?

उ० आँख मारकर हसीना, पकड़ं अपनी राह।
बाबू बकाबू हुए, मुँह स निकली आह।।

शिवी सब्बरवाल, लुधियाना

प्र० काकी स आप रोजाना कितनी बार लड़त हैं ?

उ० प्यार-तकरार सँग-सँग हों, रहे चुस्ती, बढ़ फुर्ती।
वही शरबत मज़ा दता, हा जिसमें थोड़ी-सी-तुर्शी।।

दयानंद यादव, गौहाटी (असम)

प्र० आचार्य रजनीश का पता क्या है काकाजी ?

उ० पूना में रहते प्रभो, आश्रम आलीशान।
पहले वे आचार्य थे, अब हैं श्री भगवान्।।

किशोर कुमार अरोड़ा, नदबई (भरतपुर)

प्र० काकाजी, आप किस देवी-देवता के भक्त हैं ?

उ० छाड़ो देवी-देवता, खुश रक्खो हुक्काम
इंदिरा देवी का भजा, सफल होयें सब काम।।

सुलतान 'कमल', हैदराब

प्र० लोग नित-नया फैशन आप वर्षों से उसी किए हुए हैं ?

उ० बाबू फैशन बदल दल्ल।
दाढ़ी अपनी जगह अटल्ल।।

मुकश गुप्ता, खुर्जा (उ०

प्र० शराफत छोड़ने पर इं हो जाता है ?

उ० गुंडों स पाला पड़, ह छाड़ शराफ़त, इट जवाब।।

मुन्ना बाबू खल्लइया, अन

प्र० यदि किसी पाग अभिनय दे दियां ज

उ० हीराइन के सामने, खाय।
इसी कला से हास्य जाय।।

नजमा सुलताना, सबीहा अ

प्र० आँखों में आँख कीजिए।
पीने का शौक़ है तो

उ० वो अपनी मस्त निगा कहत।
हमें शराब की तुह है।।

काका के का
दीवाना साप्ता
८-बी, बहादुरशाह
नई दिल्ली - ११

ाना
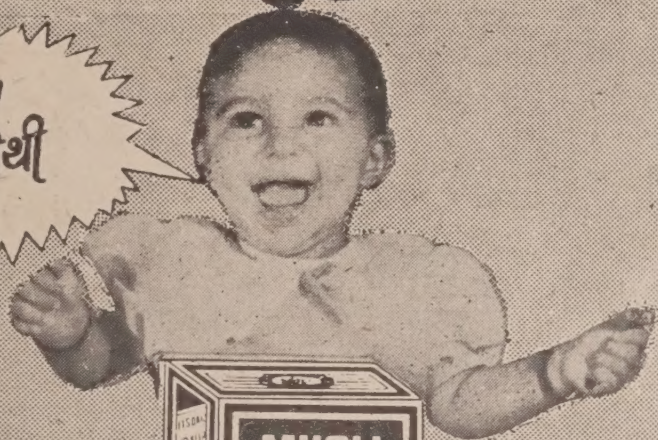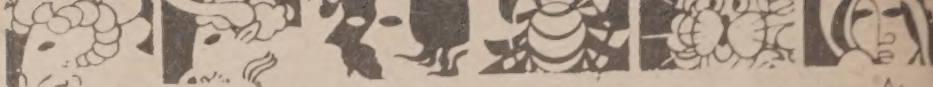
आपका भविष्य

पं॰ कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं॰ हंसराज शर्मा
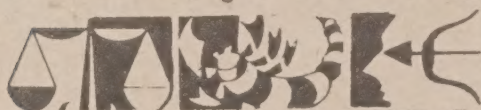
मेष : यात्रा में कष्ट, व्यर्थ की परेशानी और, व्यय हांगा, बड़ लागों के मल-मिलाप से लाभ एवं सफलता भी मिलगी, हालात सुधरेंगे, व्यय यथार्थ पर लाभ देर स मिलगा, यात्रा सफल, काराबार में उन्नति।

वृष : सेहत नरम, पराक्रम से सफलता मिलेगी, काराबार ठीक चलग, आय में वृद्धि, शत्रुओं की हार हागी, फिर भीं स्तर्क रहें, व्यय अधिक, चिन्ता भी रहगी, लाभ खर्च में समानता रहगी।

मिथुन : काइ बिगड़ा काम बन जावगा, स्थायी कामधन्धों से लाभ हागा, घरलू कार्यों में धन व्यय, सज्जनों क परामर्श स लाभ हागा, बचैनी बिना कारण ही रहगी, लाभ बढ़गा, मिलजुल फल मिलेंग।

कर्क : बड़ लागों स मल मिलाप, शुभ फलों का संचार हागा, राज़गार धन्धों में सुधार, स्वजनों से सहयाग, मेहनत का फल मिलेगा, भाग्य सहारा दगा, विशेष काम पूरा हांगा, यात्रा छाड़ दें।

सिंह : कामधन्धों से लाभ हांगा, परिश्रम का फल मिलगा, स्थिति सुधरेगी, लाभ में वृद्धि पर मिलगा देर से, यात्रा सावधानी से करें, मित्रों से सहयाग मिलेगा, राज़गार-धन्धे में लाभ, भाग्य सहारा देगा।

कन्या : आर्थिक तंगी रहेगी, सज्जनों की राय से काम बनेंगें, लाभ अच्छा मगर खर्चा भी साथ-साथ रहेगा, अफसरों से मेल जोल, कठोर महनत का फल मिलेगा, यात्रा की आशा है।

तुला : घरेलू कामों में व्यस्तता, सुस्ती थका का प्रभाव रहेगा, कामधन्धों स सामान्य ल विरोधियों की शक्ति आपका परशान क आय में वृद्धि, परिवार स सुख सहयाग, ज़ काम बन जावेगा।

बृश्चिक : नातेदारों स मल-जोल, विशेष करना पड़ेगा, लाभ खर्च में समानता, धा कामों में रुचि, काराबार आग बढ़ेगा, सफल, रुका पैसा मिलन की आशा आपसी झगडों स मन परेशान।

धनु : धन व्यय और लाभ भी हाता रह घरेलू हालात ठीक चलेंगे, दौड़धूप करने भी लाभ आशा से कम हागा, काई वि समाचार मिलेगा, शत्रु हार मानेंगे, समय अ गुज़रेगा।

मकर : पारिवारिक हालात से परेशानी, सहयोग देंगे, कामधन्धों में आय-व्यय स रहेंगे, घरलू कामों में व्यस्तता और काम का बोझ भी बढ़गा, मेहनत से बिगड़े बनेंगे, बड़ों के सम्पर्क से लाभ एवं सफल

कुम्भ : कामकाज सामान्य, लाभ देर मिलेगा, यात्रा छोड़ दें, इधर-उधर की बातों परेशानी और मन में चंचलता रहेगी, वि परिश्रम करना पड़ेगा, यात्रा सफल रहेगी, की अधिकता रहेगी।

मीन : मिश्रित फल मिलेंगें, परिश्रम अ सफलता कम, कामधन्धों स लाभ बढ़ेगा, वस्तुओं की खरीद, शत्रु हार मानेंगे, अ लोगों से मेल मिलाप, आय में वृद्धि, हा सुधरेंगे, सुस्ती आदि का प्रभाव रहेगा।

अन्धविश्वास

अख्तर बाखटिया

बहुत पुरानी बात है। एक शहर में जोन्सी और सयू नामक दो सहेलियां रहती थीं। वे दोनों एक फोटो स्टूडियो चलाती थी। वे जिस बिल्डिंग में रहती थी उसके बगल वाले बिल्डिंग में सोहन नामक एक पेन्टर रहता था। वह बहुत ही दयालु आदमी था। वह हमेशा दूसरों की सहायता करने के लिये तत्पर रहता था। उसने पेन्टिंग में भी बहुत ख्याति प्राप्त की थी।

एक बार की बात है। नवम्बर का महीना था। सारे शहर में बरसात के कारण कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। जोन्सी जब सोकर जागी तो उसका सिर भारी लगने लगा। उसे निमोनिया हो गया था। सयू डाक्टर को बुलाने चल पड़ी। डाक्टर साहब ने आकर दवाईयां दी और सयू को कहा, ''जिन्दा बचने की उम्मीद बहुत कम है, दवा से ज्यादा दुआ और आत्म-विश्वास की ज़रूरत है। यदि मरीज उम्मीद रखता हो तो ज़रूर बच सकता है। मैं आता रहूंगा,''। यह कहकर डाक्टर साहब चले गये।

सयू जब कमरे में पहुँची तो जोन्सी सो रही थी। वह जोन्सी को जगाने लगी। जब जोन्सी जागी तो वह कहने लगी, ''ये भी कोई समय है सोने का, चलो उठो पेन्टिंग करते हैं और . . .। ''मेरा अन्त तो अब निकट है मैं क्या करूंगी काम कर के . . .। इसके आगे कि जोन्सी कुछ कहे सयू ने उसके मुँह पर हाथ रखते हुए कहा, ''चुप, पगली, ऐसी बातें नहीं करते। चल उठ, देख कल्पना और रीमा तुझसे मिलने आई हैं।'' वे दोनों जोन्सी से मिलकर चली गयीं। -

घड़ी के काटें घुमते रहे। चार चक्र घूम चुके थे पर जोन्सी की तबियत भी ठीक नहीं हुई थी। उधर सयू भगवान से दुआ माँग रही थी कि उस की सहेली बच जाये। वह आज उपवास रखे हुये थी। उसे पूरा घर सूना लग रहा था इसीलिए उसने कल्पना,

रीमा और रंजना को चाय पर बुलाया था।

चौथे दिन जब जोन्सी (उठी) जागी तो जोरो की बरसात पड़ रही थी। सयू शायद बाथरूम गयी हुई थी। जोन्सी उठ कर खिड़की की ओर देखने लगी। हवा बहुत जोर से चल रही थी। सामने के पेड़ पर से पत्तियां झड़ रही थीं। सयू जब नहा धोकर कमरे में पहुँची तो उसने सुना "सतरह, सौलह, पन्द्रह . . .। "क्या गिन रही हो जोन्सी।" सयू ने खिड़की की तरफ झाँकते हुए पूछा। "पत्तियां, जोन्सी ने कहा "अगर वह सारी पत्तियां गिर गयीं तो मैं मर . . ."। "बस, बस बहुत हो चुका। सयू ने डाँटते हुए कहा "तुझे कितनी बार कहा कि ऐसी बातें मत किया कर चल उठ, नहा-धोकर तैयार हो जा तब तक मैं सोहन के पास से ब्रश लेकर आती हूं फिर अपना नाश्ता कर फिल्म चलते हैं।" यह कहकर सयू चली गयी। सोहन ने उसका और जोन्सी का हाल चाल पूछा तो उसने जोन्सी के बारे में सब कुछ बता दिये। जब सयू लौटी तो जोन्सी तैयार खड़ी थी। वे दोनों फिल्म देखने चल पड़ीं।

फिल्म देखकर वे शापिंग के लिये चल पड़ीं। रात को जब वे घर पहुँचे तो नौ बज़ चुके थे। जोन्सी का बुखार बढ़ गया था। सयू जब बाथरूम गयी हुई थी तब जोन्सी खिड़की खोलकर पत्तियां गिन रही थीं। उसी समय सयू लौट आई। उसने जोन्सी को डाँटते हुए खिड़की बन्द कर दी। इसके पश्चात दोनों सो गयीं।

रात के करीब बारह बजे बरसात बड़े जोरों से पड़ने लगी। उसे रह रहकर सयू की बातें याद आ रही थीं जो उसने जोन्सी के बारे में कहा था। हवा भी बड़े जोरों से चल रही थी। अचानक कुछ सोचकर सोहन उठा और एक-दो ब्रश, रंग की कुछ डिब्बिया और टीन का एक टुकड़ा लेकर चल पड़ा। वह जोन्सी के घर की तरफ जा रहा था। थोड़ी देर पश्चात वे जोन्सी के घर की खिड़की के सामने था। उसने पेड़ पर एक नज़र डाली। पेड़ की सारी पत्तियां झड़ चूकी थीं। उसने टीन के टुकड़े पर एक पत्ति बनायी और वहां रखकर लौट आया। बरसात के कारण वह बहुत भीग चुका था। वह कपड़े बदल कर सो गया। सवेरे उठा तो उसे बुख़ार ने घेर लिया था। उसने डाक्टर को फोन किया। डाक्टर ने कहा कि वे जोन्सी को देखकर उसके पास आयेंगे। थोड़ी देर बाद बुखार बहुत ही बढ़ गया। उसने डाक्टर को फोन करना चाहा पर फोन खराब होने की वजह से कुछ नहीं कर पाया। थोड़ी देर बाद उसकी स्थिति बहुत गंभीर थी।

उधर सवेरे जब जोन्सी ने देखा कि पेड़ पर पत्ती अभी बाकी है तो उसमें आत्म-विश्वास जाग उठा। वह अब अपने को स्वस्थ महसूस कर रही थी। वह उठ कर काम करने लगी। डाक्टर साहब ने आकर जोन्सी से पूछा "कैसी है अब तुम्हारी तबियत"। "ठीक है" जोन्सी ने कहा। डाक्टर साहब कहने लगे "अच्छा अब मैं चलता हूँ। आपके पड़ोसी, मि. सोहन, को देखने जाना है। फिर आऊँगा।" यह कह कर वे चले गये। सयू उनकी फीस देने के लिए मि. सोहन के घर पहुँची। उसके प्राण-पखेरू उड़ चुके थे। पास ही एक पर्ची मिली जिस पर यह लिखा था "हरी पत्ती मेरी आखिरी और सर्वश्रेष्ठ पेंन्टिंग है जिसने एक . . ."। शायद इसके आगे कुछ लिखने के पूर्व वे अल्ला को प्यारे हो गये थे।

सयू की समझ में सब कुछ आ चुका था। जोन्सी को सयू ने जब पूरी बात बताई तो उसे मालूम पड़ा कि वह कितनी अन्ध-विश्वासी है।

दीवान

घसीटा राम की

तूफ़ानी टक्कर

आप ने वह कहावत सुनी होगी, ''राम मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी.'' ऐसी ही एक बेमिसाल जोड़ी है, घसीटा राम और जूडो मास्टर की. घसीटा राम अपने को संसार का सबसे अक्लमंद आदमी समझता है और जूडो मास्टर का ख़्याल है कि जितनी ताकत उसमें है उतनी हार्सपावर दुनिया में किसी के पास नहीं. इन दोनों का ख्याल है कि अक्ल और ताकत जब एक हो जायें तो बड़े-से-बड़े पहाड़ को भी हथेली पर उठाया जा सकता है. अब इस से पहले कि भगवान इन दोनों को उठा ले, आप इन के ताजा कारनामों का आनन्द उठाइये.

मुझ से पहले जो अक्लमन्द थे वे सब मर चुके. मैं उन लोगों की बात कर रहा हूं, जिन लोगों ने कुतुबमीनार बनाई. इतनी ऊंची मीनार मिस्त्रियों ने इतने ऊपर चढ़ कर तो बनाई नहीं होगी. वास्तव में उन्होंने ढाई तीन सौ फुट गहरा कुआं खोद कर उसे धरती के अंदर बनाया होगा.

फिर नौबत आई होगी ताकत आजमाने की. और किसी मेरे जैसे फैंटम या टार्ज़न ने उस कुएं को जमीन से खोद कर बाहर निकाला होगा और महरौली के पार्क में उल्टा खड़ा कर दिया होगा.

और अक्ल और ताकत के संगम से इस प्रकार बनी होगी यह कुतुब मीनार.

कोई बात नहीं. कभी तो हमारे भी दिन आयेंगे. कभी तो हमारी भी तकदीर का फाटक खुलेगा.

तकदीर के फाटक की बात करते-करते वे एक ऐसी जगह पहुंचे, जहां उन की तकदीर का इंडियागेट खुलने वाला था.

पर हमारे जूडो मास्टर की दोनों टांगे साबुत हैं.

यह तो बड़ी खुशी की बात है. हमारी सारी टिकटें बिक चुकी हैं. और शो का समय हो गया है. तुम अगर सुप्रीमो के सामने दस मिनट मैदान में टिक जाओ, तो हम तुम्हें पांच हज़ार रुपया देंगे.

दस मिनट टिकने के पांच हज़ार

इतने पैसों में तो दस दिन टिका जा सकता है.

देख लो, मुकाबला आसान नहीं है. बात दिमाग़ की भी है और ताकत की भी.

कोई बात नहीं. दिमाग़ इसके पास है और ताकत मेरे पास. हम दोनों मिल कर मैदान मार लेंगे.

यह क्या मैदान मारेंगे, मैदान इन्हें मार लेगा.

वरना पब्लिक हमें मार देगी. इन्हें मैदान में उतारने के इलावा और चारा ही क्या है.

चलो कपड़े बदलो.

कपड़े बदलेंगे तो हम वापस नहीं करेंगे यह कपड़े.

वापस करने के काबिल बचेंगे, तभी ना.

चलो, उधर चलो मैदान में. एक साथ दो मैटाडोर. आज मज़ा आ जायेगा शो में.
दो मैटाडोर ? क्या तुम पांच हज़ार रुपये के इलावा हमें एक मैटाडोर वैन भी दोगे डीज़ल से चलने वाली.
दस मिनट सुप्रीमो के सामने टिक कर तो दिखाओ.
यह क्या है ? कहां धकेल दिया हमें? सुप्रीमो कहां है, जिस के सामने हमें दस मिनट टिकना है ?
वह रहा सुप्रीमो. पीछे मुड़ कर देखो.
सांड ! हमें सांड से भिड़वा रहे हो तुम ! !
और नहीं तो क्या तुम्हें हेमा मालनी के साथ डांस करने के लिये पांच हजार रुपये की आफर की है.
हमें क्या पता था तुम बुल फाईटिंग के लिये कह रहे हो.
हम तो समझे थे सुप्रीमों सूपर मार्किट में मिलने वाली "सर्फ" जैसी डिटर्जिंट पाऊडर की कोई थैली होगी.
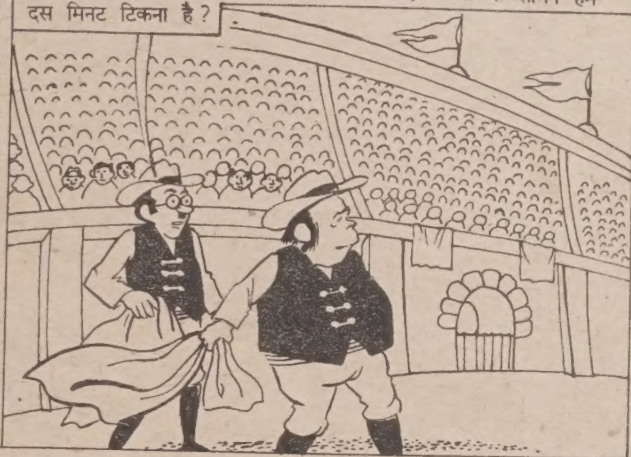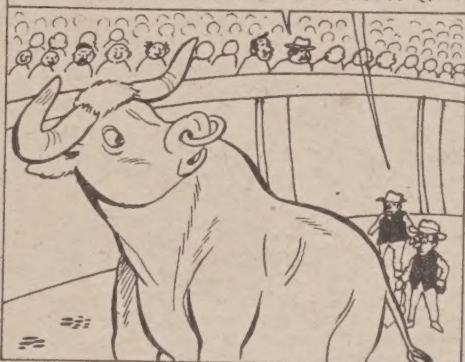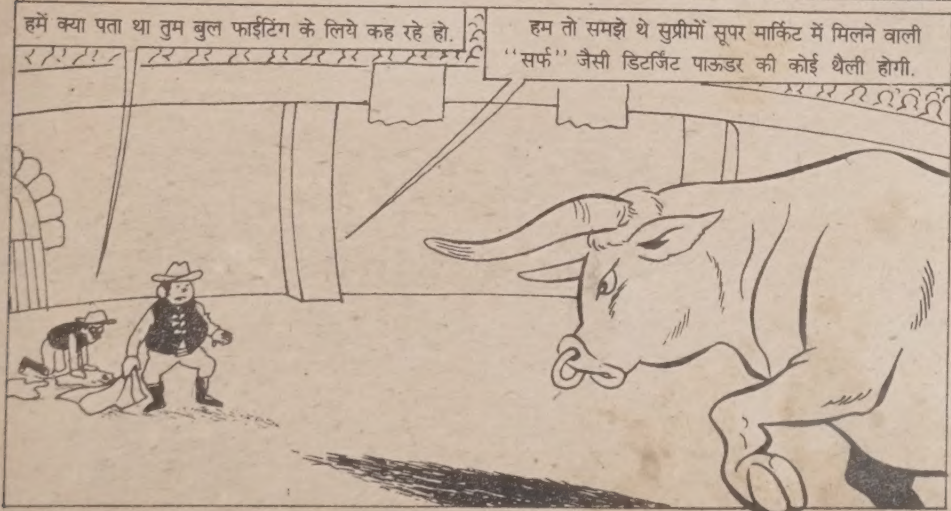
अरे अपने और मेरे बचाव की कोई तरकीब सोची है ?
हां, तेरी और अपनी कब्र खोद ली है.
अरे अक्ल से काम ले और नीचे लेट जा.
तू ताकत से काम ले और उसे थाम ले.
तू आगे आ. यह केस दिमाग़ का है.
नहीं तू ही आगे रह. यह केस ताकत का है.
गुजर गया तूफान.
और हमारा कर गया कल्याण.
देखियो, मैं जिंदा हूं या मर गया ?
कब्र में से बोल रहा है, तो मर ही गया होगा.
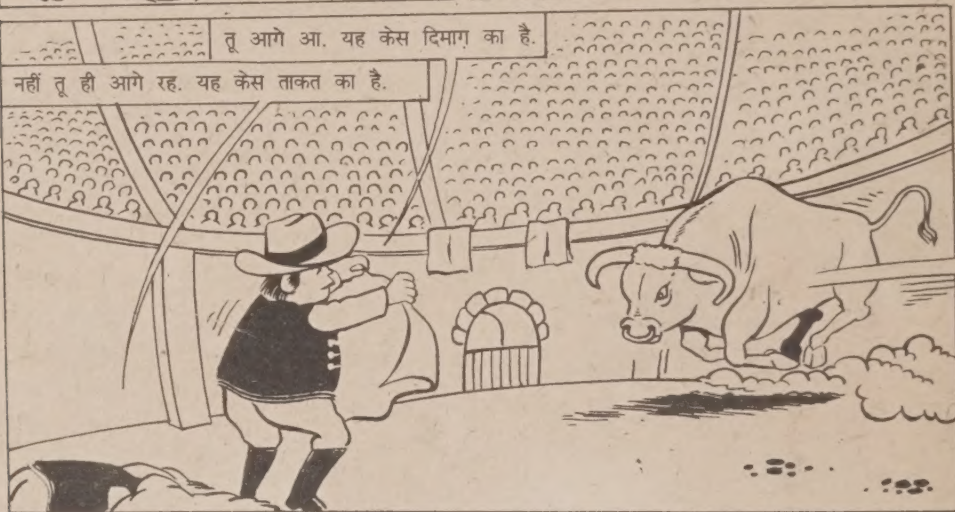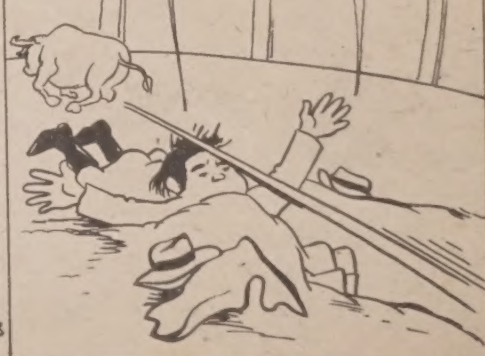
अभी वे सम्भल भी न पाये थे कि सांड फिर आ गया.
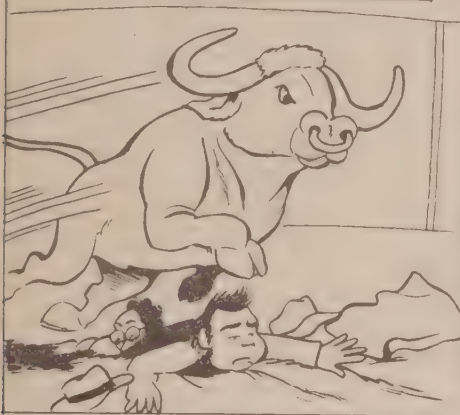
देखिये! इस के सामने दस मिनट टिकने का सौदा हुआ था. दस मिनट पूरे हो गये क्या?
अभी तो पहला मिनट शुरू हुआ है.

शाबाश सुप्रीमो. जिन्दाबाद सुप्रीमो.
मुर्दाबाद मास्टर जूडो,
मुर्दाबाद मास्टर घसीटो.
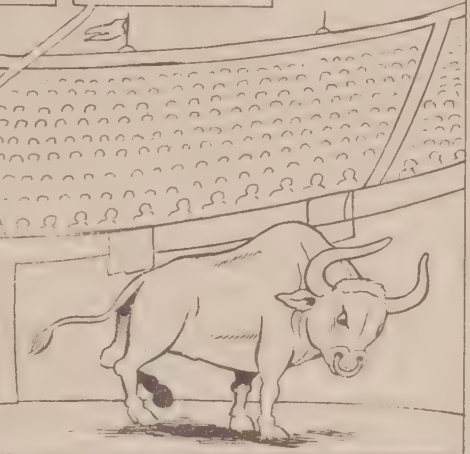
मुझे डर लग रहा है. यह कपड़ा हमें काहे के लिये दिया गया है?

अपनी आँखों पर डालने के लिये. फिर डर नहीं लगेगा.

बुल फाईटिंग ऐसे ही करते हैं. मैं ने फिल्मों में देखा है.
यह राज नारायण बना हुआ है. जनता पार्टी जैसी हालत बना देगा मेरी.
अरे मेरा जी घबरा रहा है. दस मिनट बीत जायें तो बता देना.
बताऊंगा तो तब ज़ब तू जिंदा बचेगा. अरे जान बचानी है तो नाक की सीध में सरपट भागले.
शाबाश. वाह वाह. वैलडन सुप्रीमो. वैलडन सुप्रीमो.
मैं आँखें बन्द कर के भाग रहा हूं.
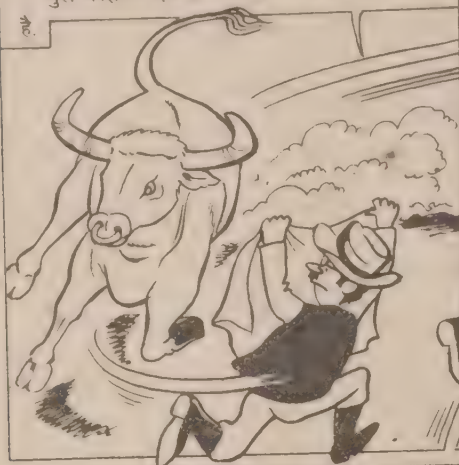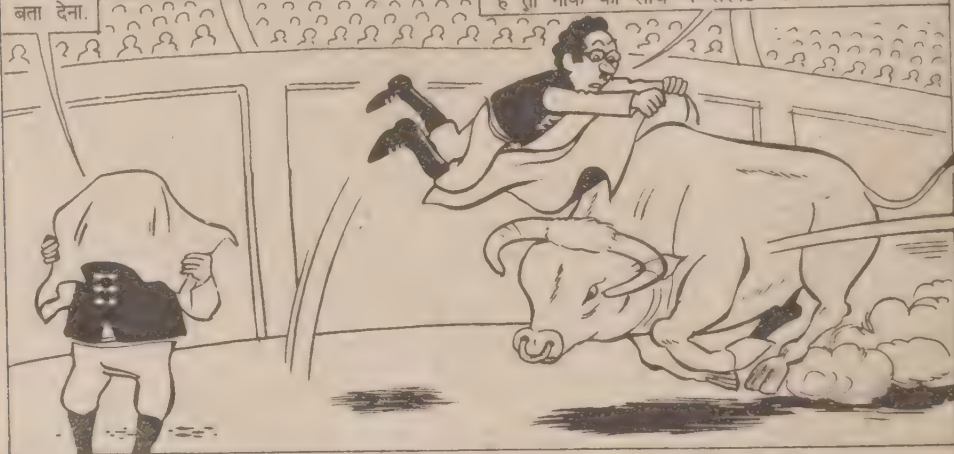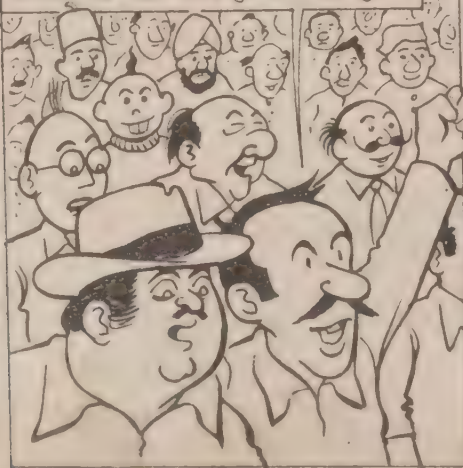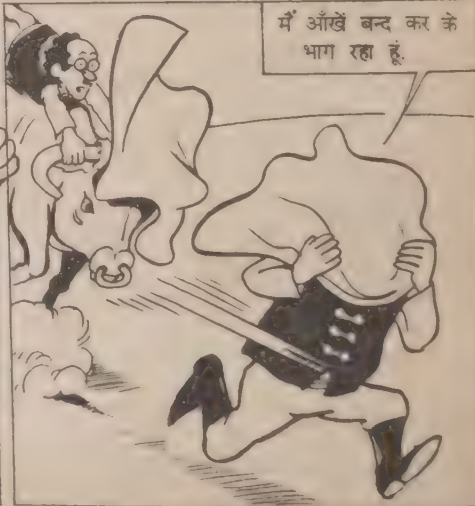
यह भी अपनी और मेरी दोनों की आँखें बन्द करके दौड़ रहा है.
धड़ाम
सांड ने इस तेजी से दीवार में टक्कर मारी थी, कि अपने साथ-साथ उसने घसीटा राम और जूडो मास्टर का भी कबाड़ा कर दिया था.
क्या दस मिनट पूरे हो गये ? सुप्रीमो के सामने अब हमें और कितनी देर टिकना होगा ?
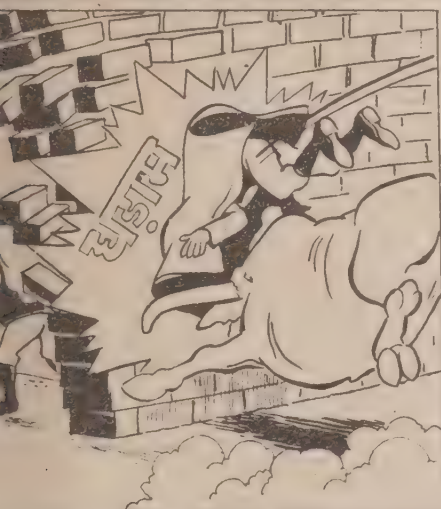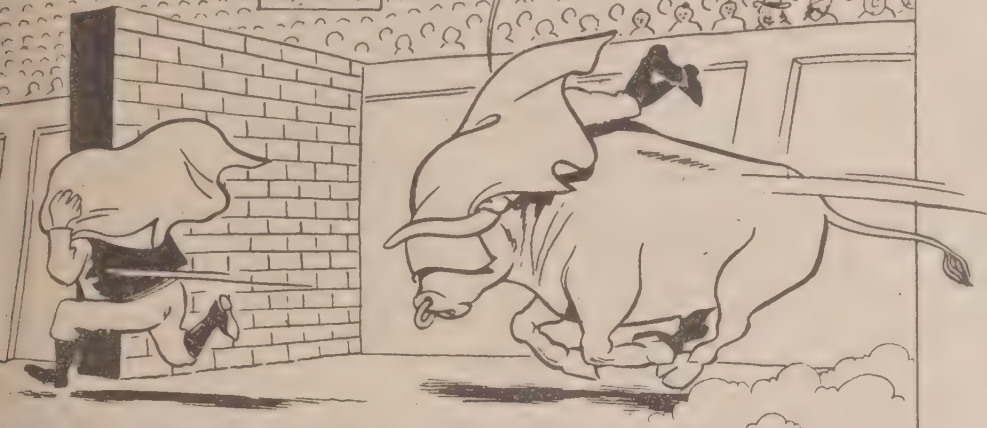
आगामी अंक में अपने इन प्रिय कलाकारों से फिर मिलिये.
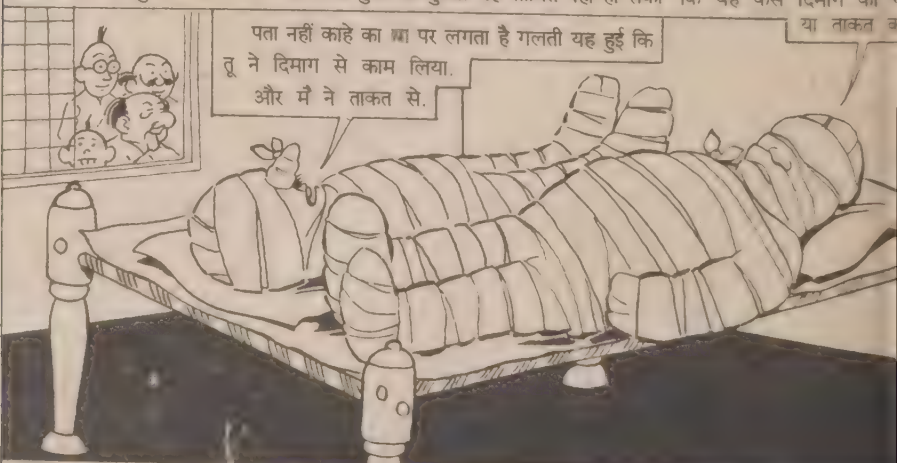
देखो, गस, तुम्हारे दादाजी ने सोचा होगा तुम इस संकेत को पकड़ लोगे क्योंकि अपने दादाजी के हर प्रकार की घड़ियों तरह-तरह से समय पता लगाने की रुचि पता था। उनका विचार था कि तुम या रे पिता डायल कैनियन से इस का बन्ध जोड़ लोगे और संदेश समझ लोगे उनकी रूचि से अपरिचित कोई व्यक्ति ओर किसी हालत में ध्यान न दे गा।

'मुझे अभी भी समझ नहीं आया', गस ा।

एक मिनट रुको! श्याम उत्सुकता पूर्वक ा, ''सनडायल कैनियन—प्राकृतिक धूप की छाया, उस स्थान पर पड़ती है जहां क छिपाया गया है, और गस को उसे जना या खोद कर निकालना है। क्या ये उत्तर है?''

'ठीक श्याम,' राजू मुस्कुराया।

'परन्तु, बाग तो बहुत बड़ा है,' महिन्दर ा हमें ठीक स्थान का कैसे पता गा?'

'इसका संदेश से पता चलता है,' राजू ने टिया 'एक बार फिर संदेश पढ़ते हैं, जरा देना, धन्यवाद!'

उसने संदेश वाला कागज़ खोला और कुछ अंश पढ़ने आरम्भ किये, ट्रक ा जा रहा था।

''अगस्त तुम्हारा नाम है, अगस्त ही ा यश है और अगस्त में ही तुम्हारा है—इसका अर्थ गस का ध्यान न शब्द की ओर आकर्षित करने के है और साथ साथ किसी दूसरे व्यक्ति लिये इससे संदेश रहस्यमय बन जाता है। फिर लिखा है, राह में आने वाले कठिनाइयों के पर्वतों से न रुकना, तुम्हारे जन्म की छाया इसके शुरू और अन्त दोनों पर पड़ती है'।

''इस वाक्य के अर्थ कुछ मालूम होते हैं और कुछ हैं। गस के दादाजी ने सोचा होगा तुम समझ लोगे, कि पहाड़ से उनका मतलब, सन डायल पर छाया डालने वाली चोटी से है। और जन्म की छाया का अर्थ है, चोटी की सन डायल पर गस के जन्म के समय, जो कि छः अगस्त दोपहर के ढाई बजे हैं! ठीक, गस?'' ''ये ठीक है, अब मुझे समझ आने लगा, राजू! अगस्त—पहाड़ — छाया — मेरे जन्म का समय—ये सब एक साथ जुड़ जाते हैं, जैसे ही तुम्हें पता चलता है, तुम किसी सन डायल की बात कर रहे हो!

''वाकी का संदेश बिलकुल साफ है'', राजू बोला, ''गहरा खोदो अधिकतर दूसरे शब्द, बाहर के लोगों को धोखा देने के लिये हैं। अपितु ''समय बहुत महत्वपूर्ण के दो अर्थ हैं, पहला जल्दी कर इसे ढूंढ़ लेना चाहिये, दूसरा फिर सन डायल की ओर ले जाता है, कि ठीक समय का बहुत महत्व है''।

'ढाई बजे आज, इस प्रकार हमारे पास केवल एक घंटा और है', महिन्दर बोला।

श्याम ने ट्रक के पीछे देखा। कोई वाहन दिखाई नहीं दिया हम सड़क पर अकेले हैं, इसका मतलब हमारा पीछा नहीं किया जा रहा,'' श्याम ने कहा।

''मुझे पक्का भरोसा है अब हम ठीक रास्ते

पर हैं'' राजू बोला ''हँस और कुणाल के साथ अब हमें कोई खतरा नहीं है'। वे खड़खड़ करते आगे बढ़ते जा रहे थे और फिर वे डायल केनियन को जाने वाली छोटी सड़क पर मुड़ गये। यहाँ पहाड़ियाँ सड़क के करीब आ गईं थी परन्तु धीरे-धीरे राह चौड़ी होती जा रही थी जब तक हिराशियो अगस्त के मकान की स्थान तक पहुँची। हँस ने रुक कर राजू को आवाज़ दी।

''राजू अब क्या करें, लगता है हम से पहले यहाँ कोई आ पहुँचा है?'' लड़कों ने खड़े हो कर निराशा से देखा। खुला सपाट मैदान, कई ट्रकों, एक बुलडोज़र और कई डीजल से मिट्टी उठाने वाली मशीनों से भरा था।

इसी समय मिट्टी उठाने की बड़ी मशीन के लोहे के मज़बूत जबड़े हिराशियो अगस्त के मकान को खा रहे थे। छत का अधिकतर भाग और घर की एक साइड टूट चुकी थी। क्योंकि मिट्टी उठाने की मशीन घर के हिस्से से ढेर ढेर सी मिट्टी उठा कर पास खड़े एक ट्रक में भर रही थी। बुल डोज़र घर के पीछे के भाग को समतल कर रहा था, साथ-साथ वह पेड़ पौधे और बाग के बचे भाग को भी समाप्त कर रहा था।

''घर तोड़ने वाले।'' श्याम बोला, मि० दूबे ने कहा था, कि घर को शीघ्र ही गिरा दिया जायेगा, ताकि बहुत से नये छोटे घर वहाँ बनाये जा सकें।'' वे बाग के हिस्से को बुलडोजर से समतल कर रहे हैं,'' महिन्दर बोला- ''हो सकता है उन्होंने 'चमकती आँख' को खोद भी दिया हो''।

''मेरे ख्याल से नहीं,'' गस [illegible] ''देखो पहाड़ की छाया उस ओर को [illegible] रही है, और वे अभी उस स्थान के [illegible] करीब नहीं है।''

घर की मिट्टी से भरा एक ट्रक इसी [illegible] उन के सामने आ खड़ा हुआ। रास्[illegible] हटो'', ड्राइवर चिल्लाया, मुझे जाना है[illegible] यह कार्य निर्धारित समय में समाप्त [illegible] है''।

हँस ने ट्रक एक ओर हटा लिया [illegible] दूसरी ट्रक तुरन्त पास से गुज़र गई। [illegible] बीच घर के करीब खड़ी दूसरी ट्रक गिर[illegible] के मलबे से भर कर तैयार हो चुकी [illegible]

''अपनी ट्रक को बाग के खुले [illegible] पर ले चल कर रोक लो। यदि कोई [illegible] पूछेगा, तो, मैं जवाब दे दूँगा।' राजू हँ[illegible] बोला ''ठीक है राजू,'' और उसने ट्र[illegible] लगभग दो सौ गज आगे बढा कर रा[illegible] अलग करके खड़ा कर दिया। लड़के [illegible] निकले और गिरते घर को देखने लगे। [illegible] छोटा तगड़ा आदमी, सूट पहने परन्तु सि[illegible] लोहे का सुरक्षा टोप पहने लड़कों की [illegible] आया।

''लड़कों तुम यहाँ क्या कर रहे [illegible] उसने पूछा, उसकी आवाज़ रुखी थी, [illegible] यहाँ तमाशबीनों की ज़रूरत नहीं है।[illegible]

''महिन्दर और श्याम को तो कोई [illegible] नहीं सूझा परन्तु राजू के पास जवाब [illegible] था। मेरे चाचा ने इस घर का सारा [illegible] फरनीचर ख़रीदा था, तो उन्होंने हमें [illegible] भेजा है कि कुछ रह तो नहीं गया।
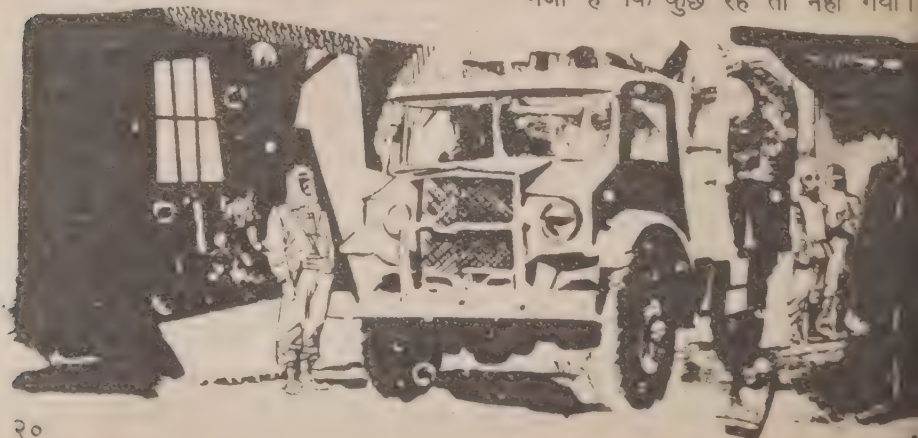
''घर में कुछ नहीं है, नाटे आदमी ने जोरदार स्वर में कहा, अब घर खाली कर तोड़ दिया गया है इसलिये वापिस मुड़ो और जाओ''। ''क्या आप हमें कुछ मिनट देखने की आज्ञा नहीं दे सकते, ये हमारा मित्र राजू ने गस की ओर इशारा कर के कहा ''इंगलैंड से आया है और ये यहाँ के घर गिराने के तरीके में बहुत दिलचस्पी रखता है''।

'मैंने कहा चले जाओ', आदमी गुर्राया ''यहाँ कोई सरकस नहीं हो रहा, तुममें से किसी को चोट आ सकती है और हमारी बीमा कम्पनी उसका जिम्मा नहीं लेती।''

''कुल,'' राजू ने अपनी घड़ी की ओर देखते हुए, जिसमें सवा दो बजे थे नम्रता से कहा ''पन्द्रह मिनट के लिये, हम रास्ते से बिलकुल दूर इधर ही खड़े रहेंगे परन्तु फोरमैन दिखने वाला व्यक्ति हाँ करने के मूड मेंनहींलगताथा ''अब ! वहबोलारास्तानापो''।

सब लड़कों की दृष्टि बाग़ पर पड़ती पहाड़ी की छाया की ओर गयी पन्द्रह मिनट में ये छाया चमकती आँख के गुप्त छुपे स्थान पर पड़ेगी। ''हाँ जनाब ! हम चले जाते हैं, राजू बोला,'' मुझे विश्वास है आपका मेरे घर की एक फोटो लेने में कोई आपत्ति न होगी। हालाँकि इसमें केवल एक मिनट ही लगेगा।

राजू उत्तर की प्रतीक्षा करे बिना पहाड़ी की छाया की नोक की ओर जहाँ से वह बाग पर पड़ रही थी चल पड़ा, इसी बीच वह अपना कैमरा सेट करता जा रहा था। आदमी पीछे चिल्लाने लगा, परन्तु इसका कोइ प्रभाव पड़ता न देख वह चुप हो गया। राजू छाया की नोक के लगभग एक गज़ पहले रुक गया और खड़े हो कर घर की फोटो खींच ली। फिर उसने कैमरा नीचे रख कर बैठ कर अपने जूते का फीता कसा, उसके बाद वह चलता हुआ वापिस आ गया।

''धन्यवाद श्रीमान्, वह बोला ''अब हम चले जायेंगे''।

''और वापिस न आना,'' आदमी ने नाराजगी से उत्तर दिया। कल हम सारे स्थान पर बुलडोजर चला देंगे और तीन माह में यहाँ छः नये घर बन जायेंगे। चाहो तो तब आकर उनसे घर खरीद लेना।'' और वह व्यगंपूर्वक हँसा !

राजू ट्रक में चढ़ गया, सारे लड़के उसके पीछे ट्रक में बैठ गये हँस ने इंजन स्टार्ट कर धीरे-धीरे ट्रक चलाया, महिन्दर ने एक लम्बी साँस छोड़ी।

'बड़ा बुरा हुआ' वह बोला 'ठीक उसी समय जब हम गस की वसीयत के करीब पहुँचे, तभी बुरी तरह भगा दिये गये। और कल वे सारे बाग में बुलडोज़र चला देंगे, हम तो मारे गये।

'नहीं अभी नहीं', राजू ने गम्भीर हो कर कहा, 'हम आज रात को आ कर एक बार फिर कोशिश करेंगे'।

''अँधेरे में ?'' श्याम ने पूछा, 'अंधेरे में हम ठीक स्थान कैसे पता लगा पायेंगे ? पहाड़ी की छाया थोड़े ही पड़ रही होगी उस

शेष पृष्ठ २४ पर

सवाल यह है?

कहते हैं, हर सवाल का एक जवाब होता है, पर कुछ जवाब ऐसे होते हैं, जो बेशुमार सवाल पैदा कर देते हैं। ऐसे ही कुछ सवालों के जवाब यहां प्रस्तुत हैं. एक सवाल यह है:
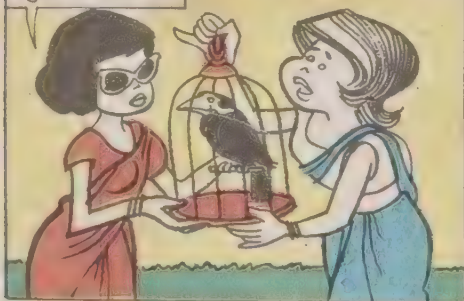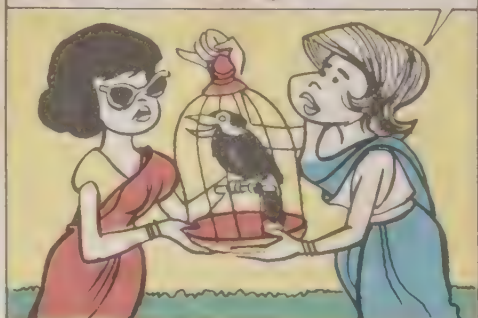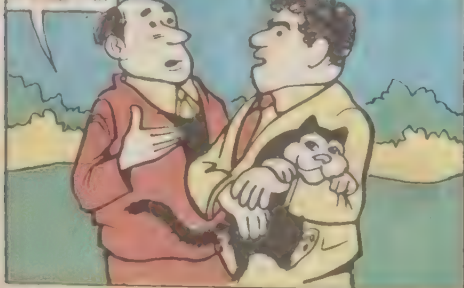
जो लाजवाब है?

सवाल यह है:
यह तो बड़ी खुशी की बात है, कि जिस ने तुम्हारे बेटे पर हाथ उठाया, तुम्हारे कुत्ते ने उसका गला दबोच लिया. कौन था वह आदमी ?
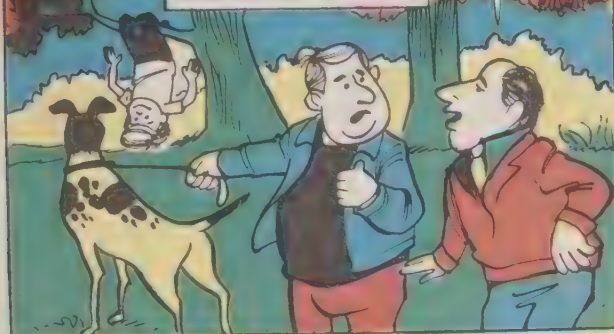
जवाब हाजिर है:
वह मैं था.

सवाल यह है:
मुन्ने ने जिद की कि वह बन्दर को घर में रखेगा, और बन्दर तुम्हारे साथ रहने लगा ?

जवाब हाजिर है:
इस समस्या का दूसरा समाधान यही था कि हम बन्दर के साथ दरख़्तों पर रहने लगते.
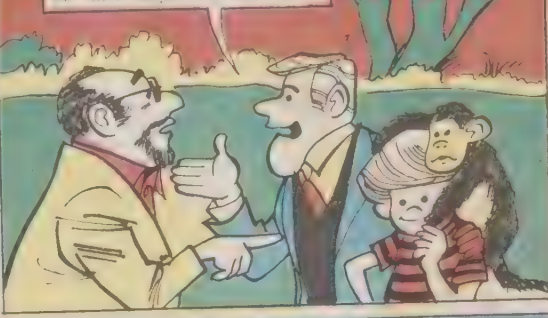
सवाल यह है:
मैं ने तुम्हारे कुत्ते के बारे में ऐसी कौन सी बात कह दी ! क्या यह नाक पे मक्खी नहीं बैठने देता ?
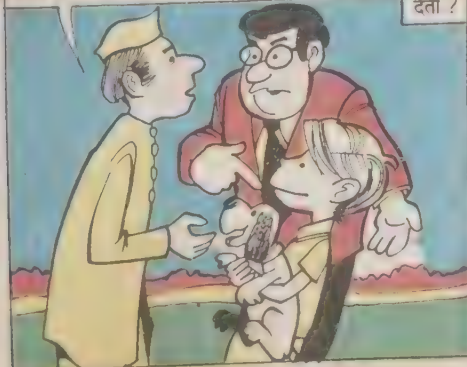
जवाब हाजिर है.
मै नाक पर मक्खी नहीं बैठने देता.

पृष्ठ २१ से आगे

समय। 'हम चीलों से कहेंगे की वे हमें बताऐं' राजू ने उत्तर दिया।

ये रहस्यपूर्ण टिप्पणी कर वह मौन हो गया।

''अनचाहे आगुन्तक''

बाकी दुपहर का समय चींटी की चाल से
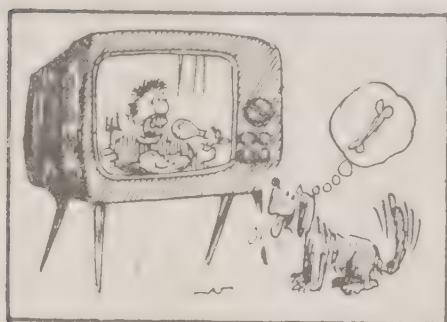
व्यतीत होता प्रतीत हो रहा था। हँस और कुणाल को रात में साथ रखने के लिये राजू ने उन्हें दोपहर की छुट्टी दे दी तथा महिन्दर श्याम और गस कबाड़ी घर की पुरानी लोहे की कुर्सियों पर रोगन कर उन्हें तैयार करने में लगे। दोपहर ढलते-ढलते कुर्सियाँ पेन्ट हो कर नई के समान हो गईं और बिकने के लिये तैयार कर रख दी गईं।

राजू सारी दोपहर वर्कशाप में किसी यन्त्र पर काम करता रहा। उसने उन्हें बताने से इन्कार कर दिया कि वे कैसे यन्त्र पर कार्य कर रहा है, परन्तु उन तीनों का अनुमान था कि 'चमकती आँख' को ढूंढ़ने में सहायता के लिये ही ये यन्त्र प्रयोग में लाया जाना होगा।

दिन का काम समाप्त होने पर सब लड़कों ने राजू के घर ही खाना खाया। खाने के पश्चात हँस ने छोटे ट्रक को बाहर हाते से निकाला और कुछ दूर अकेले से स्थान पर ले जा कर खड़ा कर लिया तथा लड़कों के आने की प्रतीक्षा में रुक गया।

'अब' राजू बोला 'हम चालाकी से किसी भी अनदेखे पीछा करने वाले को धोखा देने का प्रयास करना है। मैंने बड़ी गाड़ी के ड्राईवर को अंधेरा होते ही आने के लिये फोन कर दिया है। हमें बिलकुल तैयार रहना चाहिये। तुम बड़ी गाड़ी के अन्तिम प्रयोग की बारी का इस्तेमाल कर रहे हो, महिन्दर ने पूछा, 'इसके बाद हम कार का प्रयोग नहीं कर सकेंगे तथा हर स्थान पर पैदल ही जायेंगे''।

'हमारे पास हमारी साईकिल हैं, और कभी-कभी ट्रक का प्रयोग भी कर सकते हैं' श्याम बोला।

''उससे क्या होता है, महिन्दर बोला 'हर समय हमें किसी काम को जाने के लिये मि० माथुर ट्रक थोड़े ही दे देंगी, वे तो वैसे ही हम लोगों के ट्रक प्रयोग करने से तंग हो रही हैं, अब हम जासूसी के लिये बेकार हो जायेंगे''।

''जो भी कुछ अच्छे से अच्छा कर सकेंगे करेंगे, वैसे ये इतना आसान नहीं होगा', राजू बोला।

गस की बड़ी गाड़ी, तथा जैसे राजू ने इसका प्रयोग जीता था में बहुत रुचि थी।

'परन्तु अब हमारा समय पूरा हो गया है, महिन्दर ने लम्बी सांस लेकर सारा किस्सा गस को बताया। राजू का विचार था कि अभी काफ़ी बार बड़ी गाड़ी का प्रयोग कर पायेंगे परन्तु किराये की गाड़ी की कम्पनी के मालिक मि० गणेश किसी तर्क को सुनने का तैयार न थे। इस कारण एक बार और फिर प्रयोग का समय समाप्त।

'ये बहुत बुरा हुआ' गस बोला 'यहाँ आकर इस शहर को देख कर पता चलता है कि इतने बड़े शहर में तुम्हें कार की कितनी ज़रूरत है। 'हम कुछ और सोचेंगे', राजू बोला 'अब बहरुपिया तैयार कर नकली स्थान की ओर भेजने का समय आ गया है'। हर कोई मेरी एक-एक जैकेट अपन कपड़ों पर पहन कर वर्कशाप की ओर चलो, मैंने जैकेट यहाँ रख रक्खी है''।

अलमारी से उसने चार भिन्न प्रकार की जैकेट निकाल कर सब को दे दीं। सब लड़कों ने उन्हें चढ़ा लिया, हालाँकि वह किसी को भी बहुत फिट नहीं आ रही थी ख़ास कर महिन्दर को, पर काम चल गया। 'भगवान के लिये, ये तुम क्या खेल खेल रहे हो?' मि० माथुर ने उन्हें देख कर पूछा 'मैं सच कहती हूँ मुझे आजकल के लड़कों के खेल समझ नहीं आते'।

'हम अपने कुछ दोस्तों को चालाकी से धोखा देना चाहते हैं, 'आँटी,' राजू बोला, और ये सुन उसके अंकल जोर से हँसे।

'सब लड़कों के तमाशे हैं मि० माथुर,' वे बोले, 'मैं जब लड़का था तो ऐसे उलटे सीधे विचार सदा मेरे दिमाग में भरे रहते थे।'

राजू घर से वर्कशाप के भाग की ओर चला और सब उस के पीछे हो लिये। जिस यन्त्र पर राजू काम कर रहा था वह मेज़ पर पड़ा था। ये यन्त्र अजीब सा हैंडल वाला वैक्यूम क्लीनर की तरह का यन्त्र था। उसके नीचे लगे गोल धातु के गोले के साथ तारों से हैडफोन जोड़ा गया था।

वर्कशाप में इसके अतिरिक्त कुछ दिन माथुर साहब द्वारा लाये चार कपड़े सीने के पुतले भी थे। वे कोने में बिना सिर के सिपाहियों के समान लाइन से खड़े थे। अब हमें इन पुतलों को कपड़े पहिनाने चाहियें,' राजू बोला, 'इसीलिये मैंने तुम सब को फालतू जैकेट पहिनने को कहा था। यदि कोई इस समय भी हमें गुप्तरुप से देख रहा है, तो मैं नहीं चाहता था, वह हमें फालतू कपड़े वर्कशाप में लाते देखे। तुम सब एक एक डम्मी को एक एक जैकेट पहना कर अच्छी तरह कस कर बटन लगा दो। सब ने राजू के कहे अनुसार किया और चारों डम्मी जैकेट पहने थीं जिनकी बाहें ढ़ीली लटक रही थीं। थीं।

'ये कुछ बहुत असली दिखाई नहीं दे रहे,' महिन्दर बोला, 'मेरा मतलब यदि किसी चक्कर में डालना है तो'?

ये सिरों के साथ बेहतर लगेंगे, राजू बोला 'ये इनके सिर हैं'। उसने एक कागज का लिफाफा खोला और चार नीले रंग के बड़े गुब्बारे निकाले। 'अब तुम दूर एक एक गुब्बारा ठीक नाप का फुला कर, डम्मी के सिर के स्थान पर बाँध दो'। उन्होंने वैसे ही किया जैसे राजू ने किया, परन्तु गुब्बारे लग जाने पर भी डम्मी कुछ बढ़िया दिखाई नहीं दिये।

'अंधेरे में इनकी परछाई बहुत ठीक दिखाई देगी' राजू बोला। वे प्रतीक्षा करते
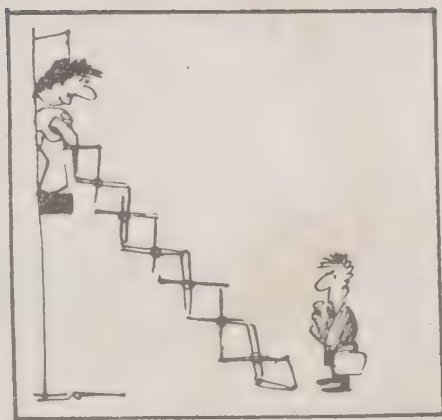
रहे, अंधेरा हो आया! चारों डम्मी गुब्बारों के सिर लगे अंधेरे में अजीब और डरावने से लग रहे थे। कबाड़ी घर के अहाते में एक हार्न की आवाज़ सुनाई दी। वह बड़ी कार का ड्राईवर है, मैंने उसे इस स्थान के बिलकुल नजदीक कार खड़ी करने को कहा था। चलो, हम सब एक एक डम्मी ले चलते हैं।

वे डरावने भद्दे डम्मी उठा कर कबाड़ के ढेर में से ले चले जब तक काली बड़ी गाड़ी के करीब न पहुंचे। ड्राइवर ने कार के भीतर की बत्तियाँ बुझा रक्खी थीं और दरवाजा राजू के आदेश अनुसार खोल रक्खा था।

'राजू साहब' मैं आ गया। बोलो क्या करना है?''

'ड्राइवर साहब ये आपके यात्री हैं, ये हमारे बदले कार में जायेंगे'।

'बहुत खूब', ड्राईवर ने उत्तर दिया लाओ इनकी बैठने में मदद करूँ। उन सब ने मिल कर चारों डम्मी पिछली सीट पर सहारे से रख दिये। बत्ती बुझा कर दरवाज़ा बन्द कर केवल चार हिलते सिरों की छाया ही दिखाई दे रही थीं। दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता था कि चार उत्सुक लड़के पिछली सीट पर बैठे हैं। ''अच्छा बरखासिंह, अब तुम इन्हें ले कर रिंग रोड से हो कर पहाड़ी के चक्कर लगभग दो घंटे तक लगाते रहना। फिर वापिस आ कर इन्हें उतार देना, देखना दो घंटे अवश्य लग जायें। और फिर मेरे ख्याल से हमारा मेल मुश्किल क्योंकि हमारा समय समाप्त हो गया है''।

शेष पृष्ठ ५२ पर
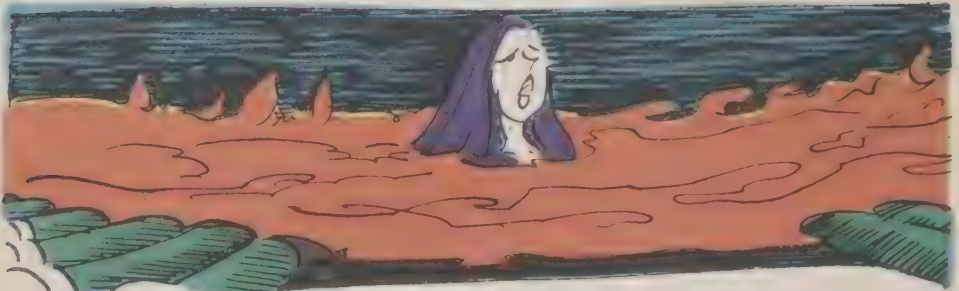
इश्क आग का दरिया है

कहते है कि इश्क इक आग का दरिया है और उसमें डूब के जाना है। प्रेम की व्याख्या हमारे रुढ़िवादी समाज में ऐसे ही की गयी है। हजारों प्रेम करने वाले इस दरिया में डूब कर जल गये। कहने-सुनने में आग का दरिया बड़ा भयानक लगता है लेकिन ज़रा आज के यथार्थ की नज़र से इसे देखें। यदि प्रेम वाकई एक आग का दरिया होता तो क्या बुरा होता ? जी नहीं ! यही आग का दरिया अभिशाप बनने की जगह वरदान साबित होता। वैज्ञानिकों की तो बांछें ही खिल जातीं। आज जब कि पेट्रोल की इतनी कमी है और कोयला कम निकल पा रहा है। यह दरिया हमारी सारी समस्यायें हल करता। एक सीधा सा उदाहरण लें। इस आग की नदी में से पानी की पाइपें गुजारी जायें, पानी का स्टीम बनेगा और उस स्टीम से बिजली के जनरेटर चलाये जा सकते हैं। जब नदी ही आग की होगी तो कितनी ही पाइपें बिछाओ और दोनों ओर कितनी ही बिजली के जनरेटर लगाओ। मुफ्त में स्टीम बनेगी, जनरेटर घूमेंगे और इतनी बिजली बनने लगेगी कि बिजली विभाग वाले लोगों से हाथ जोड़ कर अपील करेंगे कि बिजली का अधिक प्रयोग करें। बिजली सस्ती भी कितनी होगी दो तीन पैसे यूनिट से ज्यादा दाम नहीं पड़ेंगे। जिन्दा रहे। इश्क के आग का दरिया, हमारी ऊर्जा समस्या का हल।

सरकार लैला मजनूं टाइप प्रेम करने वालों को प्रोत्साहन देगी क्योंकि इन्हीं के बल पर आग का दरिया बहता रहेगा। हो सकता है कि दोनों की शादी बेशक न हो पाये लेकिन बिजली उत्पादन बढ़ाने में सहयोग देने के लिये उन्हें श्रमवीर का पुरस्कार मिले।

पुराना घाघ फिल्मी विलेन टाइप का व्यक्ति ही बिजली मंत्री बनेगा। आग के दरिये बहते रहें इस लिये प्रेमी प्रेमिकाओं की शादी में अड़चन डालना उसका मुख्य काम होगा।

पापा शीत लहर क्या होता है?

शीत लहर से १० मरे
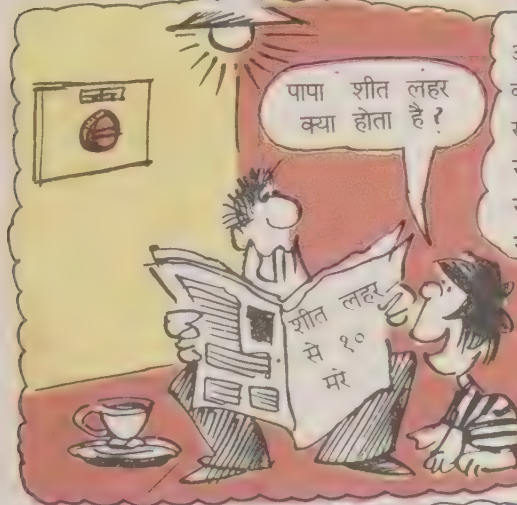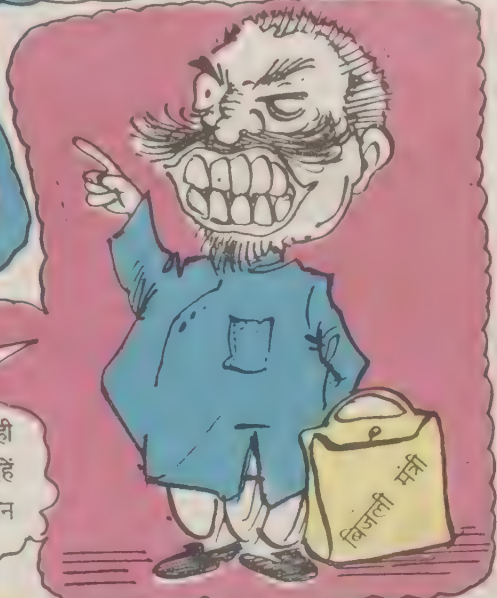
आग के दरिया के किनारे बसने वाले शहरों की मौज होगी। खाना बनाने के लिये आग सप्लाई तो होगी ही (पाइपों द्वारा) दीवारों में, स्टीम पाइपें बिछेंगी जिनके कारण कड़ाके की सर्दियों में भी मकान गर्म रहेंगे। प्रेम की गर्मी सबको मिलेगी।

जैसे ही लड़की १६ वर्ष की हुयी और आशिक मिज़ाजी दिखाने लगी कि बड़ी कम्पनियों वाले कांट्रेक्ट लेकर उसके पीछे घूमेंगे कि उसके प्रेम के आग की नदी के किनारे नया प्लांट लगाने का ठेका उन्हें मिले।
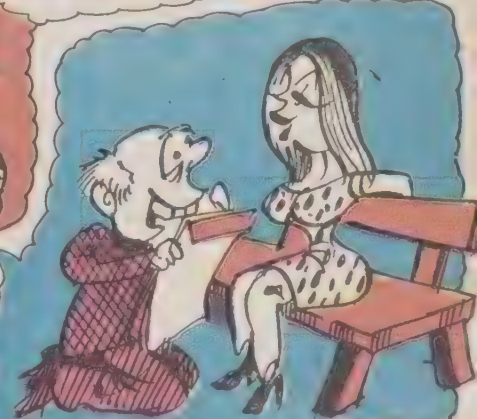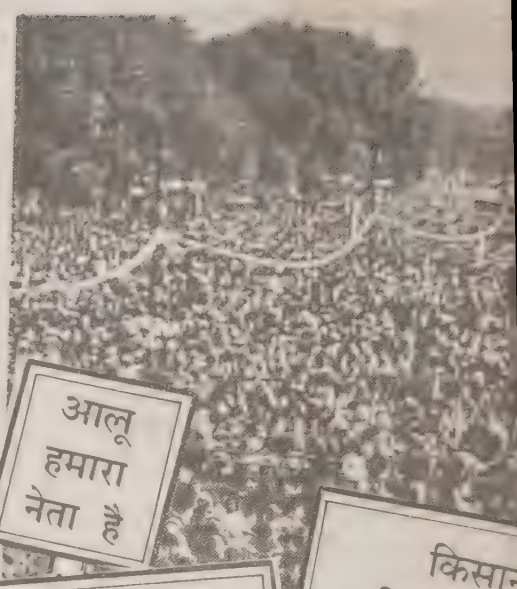
शेष पृष्ठ ३० पर

किसान रैलियों के लिये नारे

आजकल हर राजनैतिक पार्टी किसानों की रैली कर रही है। पहले रैलियां मजदूरों या सरकारी कर्मचारियों की हुआ करती थीं, अतः नारे वगैरह सब उनको ध्यान में रख बनाये गये हैं। हम कुछ नारे सुझा रहे हैं। जो केवल किसानों के लिये
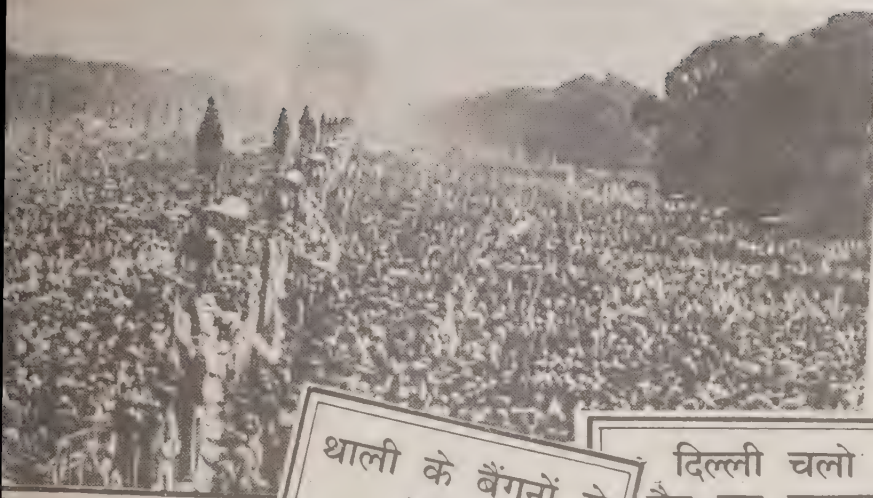
थाली के बैंगनों से होशियार
दिल्ली चलो बैठ कर तम्बाकू खैनी मलो
किसान जाग उठा है
ावल के साथ घी शक्कर मांग रहा है।
गांव से आये हैं गौना करके जायेंगे
शहर वाले हमारा गुड़ गोबर मत करो
किसानों के दुश्मन होश में आ हमें सींग मत मार
हम अपना हक मांगते हैं
तुम्हारे खेतों में अपने डंगर चराने नहीं आये हैं।

पृष्ठ २७ से आगे
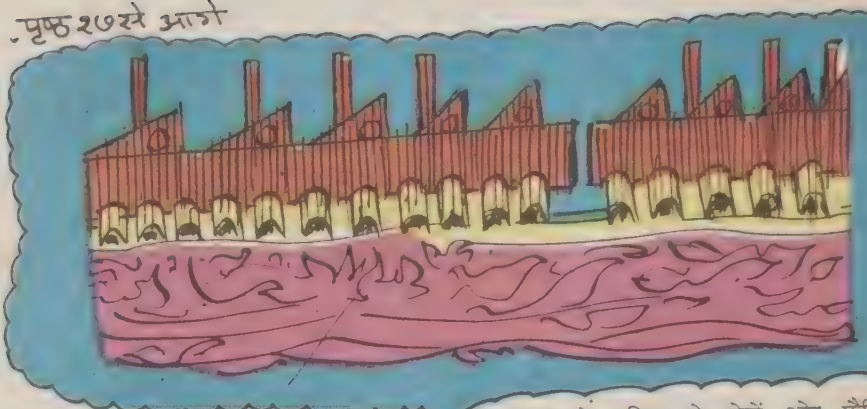
आग के दरिया के दोनों ओर फैक्ट्रियों
जमघट लगेगा ! सब अपने लिये बिजली
उत्पादन करेंगे।
बड़े-२ बिजलीघर आशिकों के नाम पर
जायेंगे जैसे लैला पावर प्लांट, हीर बिज
कार्पोरेशन, सोहनी विद्युत निगम आदि
बिजली का उत्पादन इतना होगा कि कितनी
बिजली फूंके जाओ कोई नहीं पूछेगा। दिन
एयरकंडीशनर चला कर अपना घर नार्थ-
साउथ पोल बनाये रखो।
जब सारा काम बिजली से होगा और कोयले का प्रयोग नहीं के बराबर होगा तो वायुमंडल दूषण नहीं के बराबर होगा बेशक हवा में तख्ती टांग दो ''शुद्ध वातावरण—नकली साबित करने वाले को १,००० रु. इनाम''।
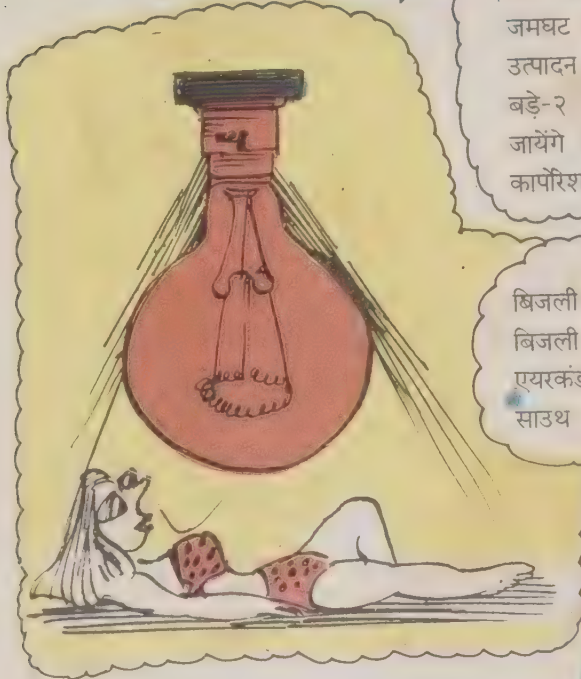
प्रेम नदियों के किनारे बसे शहर आश्चर्यजनक रूप से साफ रहेंगे क्योंकि शहर का सारा कूड़ा करकट आग की नदी में डाल भस्म किया जा सकेगा। कहीं कोई कूड़े की ढेरी नज़र नहीं आयेगी।
यह अन्याय है।
वैसे नदियों के किनारे डोरी डाले मछली पकड़ने वाले नज़र आते हैं। आग के दरिया के किनारे फायरप्रूफ सूट पहन कर लोग चिकन तन्दूरी स्टायल में मुफ्त में रोस्ट करते मिलेंगे।
ऐडमंड हिलेरी एयर इंडिया के सौजन्य से प्रेम के आग की नदी में अपना फायर प्रूफ एयरकंडीशंड बोट लेकर एक छोर से दूसरे छोर तक सफर करेंगे। अभियान का नाम होगा, ''जहन्नुम की सैर''
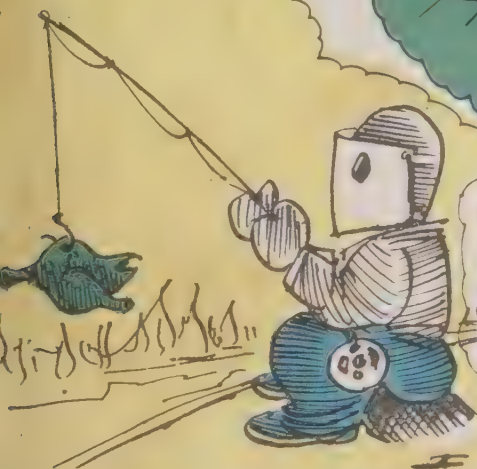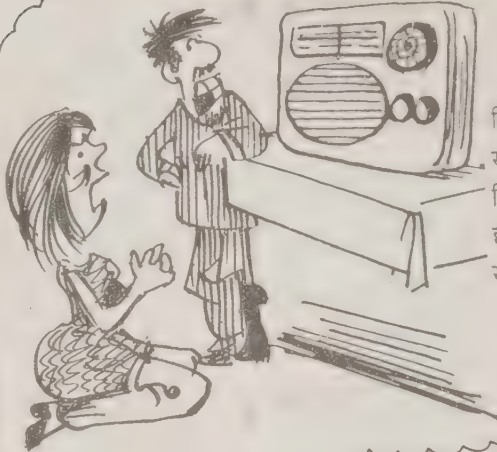
किसी दिन रेडियो से यह घोषणा होगी—सरकार ने सभी प्रेम नदियों का राष्ट्रीयकरण कर दिया है। उसके किनारे अब सरकारी बिजली घर ही बनेंगे ताकि समाज के गरीब तबकों को समान रूप से बिजली दी जा सके . . .

जाति पाति के बंधन मत तोड़िये खूब दहेज लो दहेज दो

प्रेम पहले की तरह ही एक गुनाह बना रहे इसलिये रेडियो टीवी पर ऐसी अपीलें आयेंगी . . .
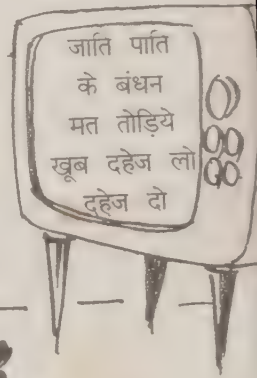
दीवाना अंक ४ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

क	क	ड़ी		र	म	जा	न
थ	म		मि	ह	र	न	
नी	ल	म		ट		व	श
औ		लों	ग		द	र	
र	हा	ल	ल	लू	ही		स
क	ट		ला	ट		ग	म
र		मं		मा	ई		त
नी	म	च		र	मा	त	ल

निर्णय लाटी द्वारा

विजेता—नरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा प्रहलाद शर्मा, अलख सागर कुपे के पास, बीकानेर (राजस्थान) ३३४००१
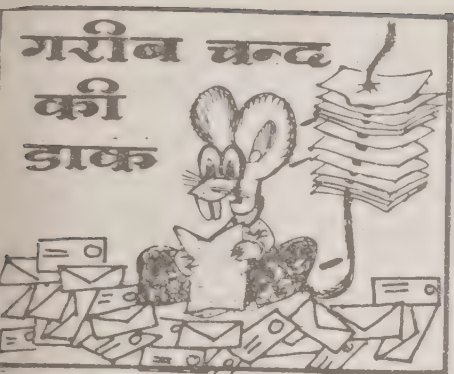
राजीव पँवार—पुरबियों का बास, उम्मेद चौक जोधपुर (राज.) : आलस का आविष्कार किसने किया?

उ० : उस व्यक्ति ने जो सबसे पहले सरकारी ड्यूटी पर गया होगा।

गुरदास परचानी—बरेली (यू.पी.) : आपका नाम गरीब चंद और ठाठ अमीरों जैसे?

उ० : नाम तो आपका (गुर) दास है लेकिन फैशन बॉस जैसा?

मोहन लाल शर्मा—करनाल : मेहनत का फल कब मिलता है?

उ० : जब आप फलों की दुकान के सामने खड़े हों और मेहनत जेब से पैसे निकालने की करें।

अनिल कुमार गुप्ता—तपकरा (म०प्र०) : मैं आपके मस्तिष्क का अध्ययन करना चाहता हूं। क्या आप मुझे अपना मस्तिष्क बेचेंगे?

उ० : आप अपना टैन्डर भेज दीजिये। मेरे पास सी.आई.ए. और के.जी.बी. वालों के टैंडर पहले ही आ चुके हैं।

अक्षय कुमार बड़कुल (म०प्र०) : सुन्दर नारी की तुलना चांद से की जाती है तो कुरूप नारी की?

उ० : उसकी भी चाँद से की जाती है। फर्क सिर्फ इतना है कि यह चांद अपोलो ११ वालों का है और वह चांद कवियों वाला।

रविन्द्र नाथ सरीन—लुधियाना : आपकी बिरादरी वाले हमें बहुत तंग कर रहे हैं। हम आपका लिहाज करते हैं। फिर भी अगर आपकी आज्ञा हो तो . . . ?

उ० : मेरी आज्ञा लेने के लिये आपको म्यूनिसिपल कमिश्नर व मैजिस्ट्रेट फर्स्टक्लास का एटेस्ट किया प्रार्थनापत्र भेजना होगा।

अशोक जौहर 'गगन'—देहरादून : गरीब चन्द जी क्या आपकी बिरादरी में भी चुनाव होता है?

उ० : नहीं। हम लोग बिस्कुट टॉस करके फैसला कर लेते हैं।

मधुमीत बतरा—पानीपत : आपकी बीवी ने आप को फटेहाल देखकर आपका नाम गरीबचन्द रखा या किसी और कारण से . . . ?

उ० : मेरी बीबी तो मेरा नाम दहेज चन्द रखना चाहती थी।

महेश कुमार मेघानी—रायपुर (म.प्र.) : प्रिय गरीब चन्द जी, आपकी शादी हुई है या नहीं?

उ० : आपको इतना भी याद नहीं है जब मेरी शादी हुयी थी तो सरकार ने हर राशन कार्ड पर २०० ग्राम अतिरिक्त चीनी दी थी।

योगेश सधवी जैन—बेरमो : गरीब चन्द जी, गरीब को डाक लिखने के लिए बहुत पैसे खर्च होते है तो आप खर्च कैसे सहन करते हैं?

उ० : जैसे आप १५ रुपये किलो चीनी का खर्च सहन कर रहे हैं।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

बुरे फंसे बड़े बनने के चक्कर में

रंग भेद की नीति समाप्त हो

ब्लैक मनी व व्हाइट मनी दोनों का समान आदर करो

दीवाना

प्र०: पृथ्वी के अन्दर का भाग गरम क्यों होता है?

उ०: पृथ्वी की बाहरी सतह पर चट्टानों की एक दस से तीस मील मोटी तह है। जब हम इस सतह के भीतर जाने लगते हैं तो हमें पता चलता है कि पृथ्वी के भीतर का तापमान बढ़ता जाता है। हर १३० फ़ुट की ग़हराई के बाद तापमान एक डिग्री बढ़ जाता है।

पृथ्वी की सतह के दो मील भीतर का तापमान पानी के उबलने के तापमान जितना हो जाता है। यदि खुदाई करके पृथ्वी के ३० मील भीतर तक पँहुचा ज़ा सके तो वँहा का तापमान १,२०० डिग्री होगा। वैज्ञानिकों का विचार है कि पृथ्वी के मध्यबिन्दु का तापमान ५,५०० डिग्री सैंटीग्रेड है।

पृथ्वी की सतह की दो परत हैं। ऊपरी परत जिससे महाद्वीपों का निर्माण हुआ है ग्रेनाइट की बनी है। रोनाइट की परत के नीचे बैसाल्ट नामक काली बहुत सख्त चट्टान की परत है। ये परत महाद्वीपों को सहारा देती है तथा इसी परत में वे विशाल घाटियां हैं जो समुद्र को सम्भाले हैं।

ऐसा समझा जाता है कि पृथ्वी के मध्य में एक बहुत विशाल ४००० मील व्यास का पिघले लोहे का गोला है पृथ्वी का मध्य ऐसा क्योंकर हुआ? अधिकतर वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार, एक समय सूर्य तथा पृथ्वी का सम्बन्ध था। अधिकतर वैज्ञानिकों का अनुमान है, एक समय पृथ्वी गैस, तरल पदार्थ या ठोस पदार्थ का घूमता हुआ द्रव्य-

मान था जो सूर्य की आकर्षण शक्ति कारण उसके चारों ओर चक्कर काटत और जैसे-जैसे समय बीतता गया ये ठंडा होता गया और ये बड़ा गोला सि गया। घूमने के कारण इस द्रव्यमान आकार गोले के समान हो गया। ये गर लाल था और सूर्य के चारों ओर चक्कर रहा था।

जैसे पृथ्वी ठंडी होती गई, एक ब कठोर परत इसके ऊपर बन गई। कि भी इस बात का ज्ञान नहीं है कि इस को बनने में कितना समय लगा होगा। इस परत के भीतर पृथ्वी का मध्य पृथ्वी का गरम मध्य बना रहा, जो तक इसी समान गरम है।

क्यों और कैसे?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

तू उसकी चिन्ता न कर। बिजनैस सैंस मुझ में वहुत है। कई बार मैंने अंधेरे में खोटी अठन्नी चला रखी है। भिखारी के कटोरे में चवन्नी का सिक्का डाल अठन्नी उठा ली। लाला छदामी लाल से रामलीला के लिये चन्दा वसूल किया है।
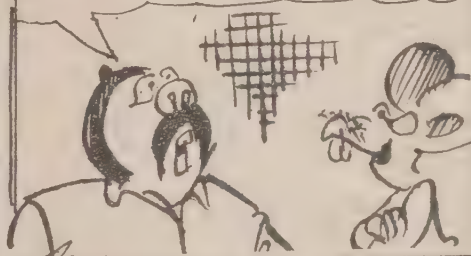
यह क्या कर रहा है? तूने बैंक से सुना है कि अपने सारे पैसे निकलवा लिये हैं। तू ऐसी बेवकूफी मत कर! बिजनैस का तुझे कुछ पता नहीं है। सारे पैसे बर्बाद कर देगा।
हम तेरे भले की बात ही कर रहे हैं
खबरदार जो मेरे पैसे को हाथ लगाया तो मुझ से बुरा कोई नहीं होगा। मेरी मर्जी है अपने पैसों का जो करूं. थम दोनों के पेट में दर्द क्यों उठ रहा है?
मैं बिजनैस करुंगा थम मेरी तरक्की से जलते हो।
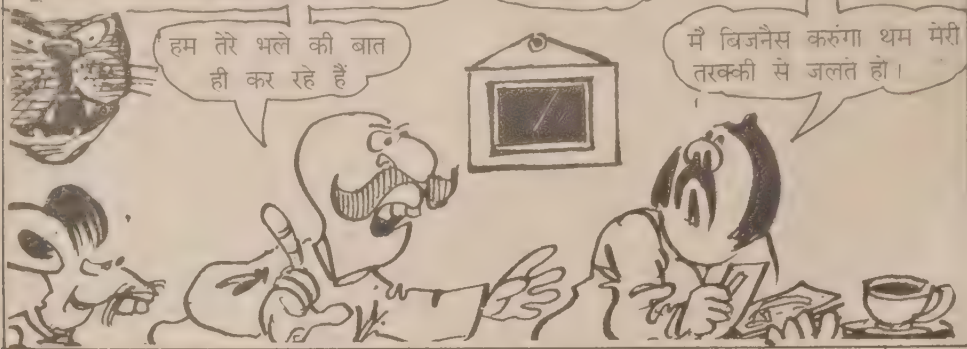
मुझे थम दोनों की सलाह की ज़रूरत नहीं है। मेरे बिजनैस के रास्ते में रोड़े मत अटकाना। थम नहीं चाहते कि मैं टाटा या बिरला के बराबर पहुँच जाऊं।
ऐसा बिजनैस शुरू करूंगा कि देखते ही देखते पैसे गरीब के दुखों की तरह बढ़ते जायें। लेकिन पहले फैसला यह करना है कि किस धंधे में हाथ लगाया जाये इसके लिये पहले मुझे मार्केट जाकर बिजनैस का सर्वे करना चाहिये। केयर फुल स्टडी ऑफ दि मार्केट ट्रेन्डस।

पता नहीं किसघड़ी में मैंने खाली डिब्बों की यह दुकान खोली थी। महीनों ग्राहक नहीं मिलता। दुकान में बैठे सोते-सोते सारी पसलियां दुखने लगती हैं। कोई बेबकूफ मिल जाये तो दुकान बेच कर चैन क़ी सांस लूं। दुकान के बाहर कोई खड़ा है।
पहले यहीं जाकर जरा पता कर लिया जाये कि यह धंधा कैसा है।

आइये हजूर आइये। बताइये क्या पेश करूं। बढ़िया क्वालिटी के ताजे-ताजे खाली डिब्बे दिखाऊं ?
है है है है ! अगर आप बुरा न मानें तो मैं बता दूं कि मैं ज़रा यह पता करना चाहता हूं कि आपका यह धंधा कैसे चल रहा है। दिन भर में कितने खाली डिब्बे बिक जाते हैं। क्योंकि मैं बिजनैस शुरू करना चाहता हूं
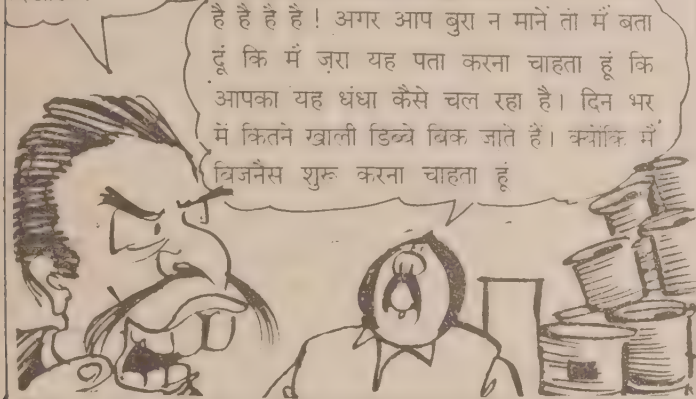
आप बिजनैस शुरू करना चाहते हैं हा हा हा !
हजरत आप बिल्कुल सही जगह आये हैं।
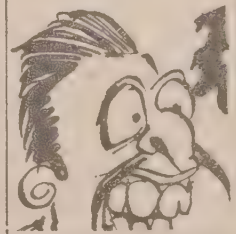
ब्रादर आ हा हा हा हा ! आजकल यही तो एक धंधा है जो सौ मील की स्पीड से चल रहा है। बाकी सारे धंधे ठप्प पड़े है। आपको तो पता ही होगा कि देश में कितनी महँगाई चल रही है। लोगों के पास कुछ खरदीदने को पैसा नहीं हैं। असल में लोगों का डिब्बा गोल हो रहा है। बस अपना डिब्बा गोल करने के लिये लोग अपनी ही दुकान से तो डिब्बे ले जाते हैं। सेल ऐसे होती है कि सीजन में दर्जनों आदमी नौकर रखने पड़ते हैं. कहते हैं कि रात को टाटा और बिरला भी भेष बदल कर यही धंधा करते हैं।

इत्त्फाक की बात और आपकी खुशकिस्मती देखिये मैं यह धंधा बेचने की सोच रहा था।
जब इस धंधे में इतनी कमाई है तो आप इसे बेचना क्यों चाहते हैं ?
यह देखो तुम मेरी अगुंलियां देख रहे हो ? नोट गिनते-२ इनमें गठिया हो गया है डाक्टरों ने कहा है कि नोट गिनना फौरन बंद कर दो वर्ना इनसिफीलाइटिस हो सकता है, बस इसी मजबूरी में सोने जैसा धंधा बेच रहा हूं.

खाली डिब्बों का व्यापार कैसा चला . . .अगले अंक में पढ़िये।

भारत आस्ट्रेलिया में १९८०-८१

	टैस्ट	पारियां	नॉट आऊट	रन	उच्चतम स्कोर	शतक	अर्ध शतक	कैच	स्टम्पिंग	औसत
पाटिल	३	६	१	३११	१७४	१	१	२	—	६२.२०
चेतन चौहान	३	६	—	२४९	९७	—	२	२	—	४१.५०
यादव	२	३	२	३६	२०	—	—	१	—	३६.००
विश्वनाथ	३	६	—	२१३	११४	१	—	३	—	३५.५०
किरमानी	३	६	१	१२४	४३	—	—	७	३	२४.८०
वेंगसरकर	३	६	—	१४८	४१	—	—	१	—	२४.६६
गावस्कर	३	६	—	११८	७०	—	१	३	—	१९.६६
यशपाल शर्मा	३	६	—	८३	४७	—	—	१	—	१३.८३
घावरी	३	६	२	४९	२१	—	—	१	—	१२.२५
कपिल देव	३	६	—	५५	२२	—	—	२	—	९.१६
दिलीप दोषी	३	५	२	१३	७	—	—	४	—	४.३३
रोजा बिन्नी	१	२	—	३	३	—	—	१	—	१.५०
अतिरिक्त	—	—	—	११५	—	—	—	—	—	३

शतक (२): एडीलेड में १७४ रन पाटिल द्वारा और मेलबोर्न में ११४ रन विश्वनाथ द्वारा। (सिडनी में उच्चतम स्कोर संदीप पाटिल ने बनाया जो ६५ रन का था।)

शतकीय साझेदारी (३)—१०८ रन (५ विकेट) चौहान और पाटिल और १४७ रन (६ विकेट) पाटिल और यशपाल, दोनों एडीलेड में. १६५ रन (१ विकेट) गावस्कर और चौहान मेलबार्न में। (सिडनी में उच्चतम स्कोर छठी विकेट पर संदीप पाटिल और कपिल देव ने ६७ रन का बनाया।)

भारत बॉलिंग

	बॉल	मेडन	रन	विकेट	उत्तम	5 विकेट पारी में	औसत
पाटिल	८७	४	३३	२	२-२८	—	१६.५०
कपिल देव	७२५	२६	३३३	१४	५-२८	२	२३.७८
घावरी	६९०	२०	३७०	१०	५-१०७	१	३७.००
यादव	६२२	१८	३१३	८	४-१४३	—	३९.१२
दोषी	१०९२	४०	४४०	११	३-४९	—	४०.००
बिन्नी	९०	१	७०	०	—	—	—
चौहान	१८	०	१८	०	—	—	—
अतिरिक्त	—	—	८	—	—	—	—
रन-आऊट	—	—	—	२	—	—	—

एक पारी में ५ विकेट (३)—५ विकेट ९७ रन देकर कपिल देव ने व ५ विकेट १०७ रन देकर घावरी ने सिडनी में लीं। ५ विकेट २८ रन देकर कपिल देव ने मेलबोर्न में लीं। (एडीलेड में ४ विकेट १४३ रन देकर यादव ने लीं।)

चित्रवर्ग पहेली

10रु. इनाम

तरक्की की सीढ़ी चढ़ना हो या पहाड़ की चोटी पर, धैर्य, लगन, परिश्रम व सबसे अधिक अनुशासन की आवश्यकता होती है। वह कौन सी जगह है जहां चढ़ने के लिये अनुशासनहीनता की जरूरत होती है?

र ग ी क ज ु ा ा

ि ट ा य स ख ह ि

क ल र ि च प ा

त र ि म स ग

अन्तिम तिथि–१६ मई १६८

गलती ढूंढ़िये

सही उत्तर किसी और पृष्ठ पर

फैण्टम - जंगल शहर

जल्दी से गोला बारूद लाओ, हमें काम खत्म कर उड़ जाना है . . .
ठीक ! वह दरवाजा बन्द कर दो !

ठक . . .
ठक . . .
Z
Z

कौन है ?
गोला और बारुद !

हे ! तुम तो काम खत्म करने की जल्दी में एक दम वापिस आ गये !

हाँ !
आह !

क्या तुम राष्ट्रपति लुआगा के पाइलैट हो ?
हाँ ! तुम कौन हो ?

लुआगा का मित्र . . . मैं उन्हें ढूंढ़ने आया हूँ . .
वे कहाँ हैं ?

जल्दी खोलो, मेरे हाथ भरे हुए हैं।

गोदाम बन्द हो चुका था. मुझे चौकीदार जगाना पड़ा . . .

अरे ! क्या
रहा है ?

?!
ये ही तो मैं जानना चाहता हूँ !
धड़ाम !
धड़ाम !

कौन . . तुम कौन हो ?
प्रश्न मैं पूछूँगा . . .

फैन्टम को कभी बन्दूक न दिखाओ . . .

"जब तक तुम्हारी शामत न आई हो" जंगल की पुरानी कहावत

अरे ! तुम तो बहुत जोर से मारते हो, ये लोग तो हिल भी नहीं रहे।
मारना ही पड़ता है . . . मारने वालों को !
अच्छा अब कहानी बताओ, तुम राष्ट्रपति लुआगा के पाईलैट हो।

इन लोगों ने तुम्हारा अपहरण किया। राष्ट्रपति का वायुयान कोई और उड़ा रहा है। कहाँ ? क्यों ?

कहाँ मुझे मालूम नहीं "क्यों" मुझे मालूम है। जनरल बाबाबू।
बाबाबू ?

तुमने मेरे प्राण बचाये, ये मुझे मारने वाले थे, क्योंकि मैं इनका साथ देने को तैयार न था !
देशनिकाला दिये हुए जनरल बाबाबू के लिये काम कर रहे हैं ?

हाँ ! पुराना तानाशाह, वापिस आने का प्रयास कर रहा है।
वह पहले राष्ट्रपति लुआगा को मार देगा, उसने पहले भी इसकी कोशिश की थी।
उठो ! उठो !
हमें पता लगाना है कि राष्ट्रपति को ये कहाँ ले गये हैं ?

उठो !
आह ! आह !
उन्हें नकाब पोश आदमी की कमर में लगी पिस्तौल दिखाई देती है !

उसे पकड़ो !
हाँ !

जैसे दिवार में टक्कर मारी हो, वे जमे खड़े फैन्टम से टकरा कर वापिस गिर पड़े !
?!
?!
धड़ाम !

आह !

''फैन्टम बदमाशों के साथ बहुत सख्ती करता है'' जंगल की प्राचीन कहावत !

क्या अब तुम बताने को तैयार हो ?
तुम्हारा गिरोह राष्ट्रपति लुआगा को कहाँ ले गया ?
धम
धम !

अच्छा अभी भी नहीं बताते ?

इसका मज़ा लो !
धड़ाम !

ऊँह
तुम्हारा गिरोह राष्ट्रपति लुआगा को कहाँ ले गया है
ऊँह रुको !

ऊँह बर्फीले पहाड़ों पर युवराज के महल . . .
चुप रहो !

बताओ किसके महल में !
आह ! प्रिंस अगोरडा

राष्ट्रपति अगोरडा के महल में हैं ! क्या बाबाबू वहाँ है ?
चुप . . . काफी हो गया
जहाँ तक हम . . .

क्या बाबाबू वहाँ है !
आह ! हाँ, ओह !

कैप्टन इन्हें बाँध दो
वाओ ! तुम खेल नहीं खेलते ! इनके जबड़े पर ये कैसे निशान हैं ?
क्रमशः

मदहोश

अहा मुर्गा ! सर्दी का मौसम हो, पास में बोतल हो और मुर्गा बना हो तो क्या कहने
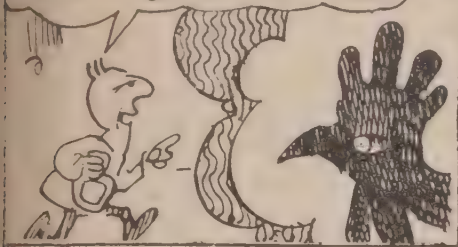
आज मुर्गे का प्रोग्राम ही बनाया जाये
क्यों भाई कितने में बेचेगा अपना यह मुर्गा ?

मदहोश होश में आ !!
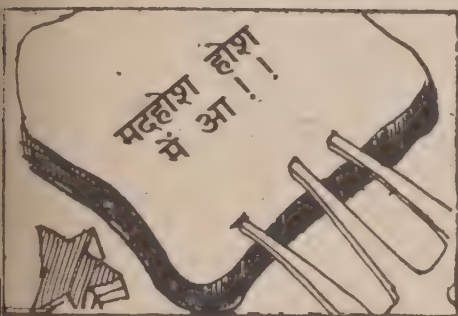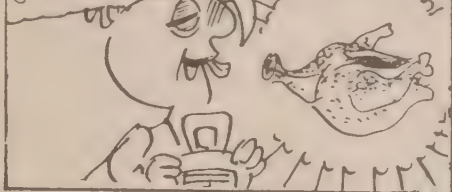
मैं पूछ रहा हूं दो का टिकट पांच में लेगा और यह कह रहा है मुर्गा कितने में बेचेगा ! बनाऊं तेरा मुर्गा ?

दीवाना पैरोडी

इन प्रकाशित शिकायतों को काट कर पोदीने के साथ पीस कर सम्बंधित व्यक्तियों को समोसों के साथ खिलाइये ताकि उन्हे और प्रोत्साहन मिले।

उन लोगों से जो बसों में महिलाओं से छेड़छाड़ करते हैं इससे एक तो सवारियों का मनोरंजन होता रहता है दूसरे वह छेड़छाड़ की ओर इस कदर ध्यान बंटा कर रखते है कि हमें आराम से लोगों की जेब काटने का अवसर मिलता है

—एक जेब कतरा

मुझे शिकायत नहीं है उन पड़ोसियों से जो सुबह हमारा अखबार उठा कर ले जाते हैं और नौ बजे से पहले नहीं लौटाते। अखबारों में लूटमार और बलात्कार की खबरें ही होती हैं जिन्हें पढ़ कर मूड खराब हो जाताहै।पड़ौसी की कृपा से कम-स-कम नौ बजे तक मेरा मूड खराब होने से बचा रहता है।

—फलस्वरुप शर्मा
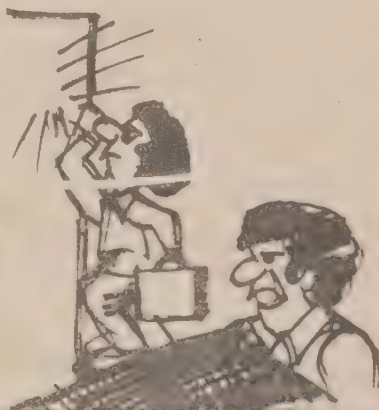
उन युवकों से जो मंजनू की तरह दिन भर मेरे घर के चक्कर लगाते रहते हैं और जो हर समय अपनी निगाहें हमारे मकान पर अड़ाये रखते हैं। उनकी चौकीदारी की कृपा से हमारे घर चोरी होनी बन्द हो गयी है। पहले हर सप्ताह चोरी हो जाती थी।

—कुमकुम पांडे

हृदय की धड़कन का टेलीफोन द्वारा प्रसारण :—

एक नवीन जेब में रखने वाले यन्त्र से हृदय रोगियों को दिल के दौरे की जल्दी चेतावनी मिल जाती है तथा इसकी सहायता से ये रोगी अपनी हृदय धड़कन का टेलीफोन द्वारा प्रसारण कर डाक्टर को बता कर अपने हृदय रोग के तुरन्त पता लगाने तथा उसकी खोज करने में समर्थ करते हैं।

अधिकतर भारी दिल का दौरा पड़ने से पहले हृदय में समय से पहले निलयी सिकुड़न होती है जिससे हृदय की धड़कन असाधरण हो जाती हैं। यदि इस अवस्था का समय रहते पता चल जाता है तो दवाईयों की सहायता से हृदय की धड़कन को संयत या ठीक कर दिल के दौरे से बचाया जा सकता है। इस प्रकार की असाधरणता जो हृदय की धड़कन में हो जाती है इसका पता लगाने के लिये निरन्तर जाँच आवश्यक है, जो अभी तक रोगी को बिस्तर पर रख कर ही की जा सकती थी। परन्तु अब कई प्रकार के साथ रखे जा सकने वाले ऐसे यन्त्र बन गये हैं। एक ऐसे यन्त्र का नाम है वीडा सैन्ट्रीकुलर आवेग पता लगाने तथा अलार्म देने वाला यन्त्र है। इस वीडा युनिट से तीन छोटे सैन्सरस रोगी के वक्षस्थल पर चिपका दिये जाते हैं और इन्हें एक छः आउँस बैटरी से चलने वाले मोनीटर से जोड़ दिया जाता है जो जेब में रखा या बैल्ट पर लगा दिया जाता है। इसके मोनीटर में रंगीन टेलीविजन से भी अधिक सक्रिय पुर्जे होते हैं। हर ऐसा मोनीटर रोगी के डाक्टर द्वारा उसके विशेष ख़तरे के चिन्ह से मिला दिया जाता है जिस से हृदय गति में अस्थिरता आते ही यन्त्र में एक हल्का सा अलार्म बजता है जिससे रोगी सावधान हो जाता है। रोगी तुरन्त ही अपने डाक्टर को फोन कर

फोन को मोनीटर के निकट पकड़ लेता है। इससे डाक्टर के विशेष सिगनल ग्रहण करने वाले यन्त्र की सहायता से ऐलैक्ट्रोकार्डियोग्राम लिया जाता है।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

सुरेन्द्र खुराना 'काका', ४४७/३ पानीपत, १९ वर्ष, पत्र मित्रता, क्रिकेट खेलना

म.न. राकेश गुप्ता, ३/१०४, प्याऊ वाली गली छोटा बाजार,शाहदरा दिल्ली-३२ २० वर्ष,

जालील हवारी 'निराला', वार्ड न. ९०, गहवा बीरगंज (नेपाल, २० वर्ष, फरमाइश करना पत्र मित्रता।

दिग्विजय सिंह रावत, पो.औ. डिग्री कालेज (पिपौरागढ़), १७ वर्ष, जूडो तथा स्केटिंग।

सुरिन्द्र लखन पाल, गांव तथा पो.औ. बस्सी गुलाम हुसैन, जिला होशियार पुर, १८ वर्ष

निन्दी डेविट, शालीमार बाग के सामने कपूरथला-१४४ ६०१, २९ वर्ष, फरमाईश भेजना ।

मोहन प्रसाद बंसल, ४४, बिकानेरिया मोहल्ला, पाली (राज.), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता

मिलन कुमार 'प्यासी', नेपाल आर्ट काउन्सिल बबर महल, काठमांडौ, २० वर्ष, पत्र-मित्रता,

नूरआलम राज, मीरगंज, १८ वर्ष, कल्पना करना, गम भरे गीत सुनना, सच्ची दोस्ती करना।

सिद्धार्थ गणवीर, खठाशी लाईन, मोहन नगर नागपुर - ४४०००१, २९ वर्ष, सायकिलिंग करना,

उमेश कुमार जीवणाणी, प्रकाश चन्द आसुदामल, तेरवा नोकाभ पोस्ट बिलासपुर म.प्र., आयु १८

रोहित रोहित बसन्त सिंह, भाटी आलिराजपूर म.प्र. महात्मा गांधी मार्ग एवर ग्रीन लोज बस स्टेण्ड,

अजय कुमार अरोड़ा, १०९/२३९ जवाहर नगर, कानपुर-१२, १२ वर्ष, क्रिकेट खेलना

विनोद कुमार अग्रवाल 'पूस', मोंठ (झांसी) उ.प्र. २८४३०३, १८ वर्ष, पत्र मित्रता

अभिदुर रब, करीम गंज 'गया' (बिहार), १२ वर्ष, [illegible] पढ़ना।

रवीन्द्र अग्रवाल, अग्रवाल सदन, [illegible]जकर बाजा, ग्वालियर (म.प्र.) - ४७४..०९, १७ वर्ष,

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

जय भगवान शर्मा, म.न. ४४ गली नं. २ विजय नगर अमृतसर, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, मेहनत करना।

सुनील कुमार गुप्ता, १८४१ सैक्टर २२-बीच चन्डीगड़, २९ वर्ष, आमपापड़ खाना।

छवि कुमार अग्रवाल, के द्वारा श्री शंकर लाल अग्रवाल, ७१० मुनिगंज इलाहाबाद, १५ वर्ष, देखना, उपन्यास पढ़ना

दीपक ठाकुर, डी प्लास पुर पो. दुलियाषान, १८ वर्ष, फिल्म
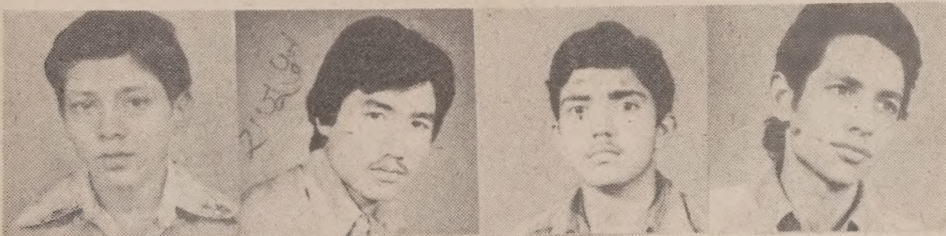
शहनशाह रिज़वी, शीरीब महल चोआ लाल लेन पटना सिटी-८००००८, १५ वर्ष

राजू पुन, ट्रेनिंग सेन्टर, आर.पी.एफ. कालोनी, १९ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना

विवेक शंकर शुक्ल, के द्वारा जे.आर. हाई कोर्ट कैम्पस लखनऊ (उ०प्र०)

मनजीत राय तनेजा, बस स्टैण्ड मण्डी गिदडबाहा, १५२१०१ (पंजाब), १९ वर्ष।

चन्द्र प्रकाश वर्मा, कुनरी, रकाब गंज, २५५/२८४ लखनऊ, १६ वर्ष, हॉकी।

श्री सुरेश कुमार बेड़ीया, पो. टंगला, जिला. दरंग, आसाम, ९ वर्ष, फोटोग्राफी, गाना सुनना।

श्री रंजीव कुमार सूत, आशागर आलि रोड़, हाउस न. ३ तली-ठापुल डिब्रगढ,

भूषण शोरीलाल भजाना, ४/१ श्रृंगार को. ऑ. सोसायटी, गुडस रोड (कल्याण) जि. थाना, १५ वर्ष,

बालमुकुंद बाबुराद, सानवणे, घाट राण भोगढी चालीस गांव जि. जलगाँव, १४ वर्ष

अनिल मदान "पम्मी", रोल न. ५५८ बी ए. प्रथम वर्ष सनातन धर्म कालेज, पानीपत हरियाणा

हमारा पता: दीवाना फ्रैंडस क्लब ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______________________

पता ______________________

____

आयु ____ शौक ______________________

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

पृष्ठ २५ से आगे

"मैं ऐसा ही समझता हूँ' लम्बे ऊँचे ड्राईवर ने कहा, "मुझे सुन कर खेद हुआ क्योंकि आप का साथ मुझे अच्छा लगता था। अच्छा फिर अब मैं चलता हूँ"।

लड़कों ने उस काली कार को जाते देखा, मानो काली गाड़ी ध्यान हटाने के लिये प्रयोग की गई हो।

'अच्छा, श्याम बोला, "यदि कोई खुफिया रूप से हमें देख रहा है तो मेरा अनुमान है वे सोचेंगे की कार में हम ही हैं, कम से कम शुरू में तो ऐसा ही लगेगा।"

'मैं तो इसी के भरोसे हूँ कि गुप्तचरी करने वाले इस कारे के पीछे जा कर देखना चाहेंगे, कि हम कहाँ जा रहे है?' राजू बोला अब हमारे जाने की बारी है हम दूसरे दरवाज़े से निकल कर ट्रक में बैठे हँस से मिलेंगे। महिन्दर तुम मेरा डिटेक्टर ले चलो'।

महिन्दर ने डिटेक्टर जिस यन्त्र पर राजू दोपहर में काम कर रहा था उठा लिया तथा तीनों पीछे की ओर फट्टों से ढके विशेष गेट से कूद कर अंधेरी गली से हो कर कई ब्लाक आगे खड़ी ट्रक तथा हँस को मिले। वे ट्रक में बैठे और चल पड़े, जितनी दूर पीछे दिखाई देता था उतनी दूर तक उन्हें कोई कार उनके पीछे आयी दिखाई न दी।

डायल केनियन तक का रास्ता निर्विघ्न पूरा हो गया। फिर वे गस के दादाजी के आधे टूटे घर के निकट पहुँचे तो वहाँ न तो किसी प्रकार की हलचल थी और न ही कोई आवाज़ सुनाई दे रही थी। कई बड़े-बड़े ट्रक और बुलडोज़र अगले दिन काम करने के लिये वहाँ खड़े किये हुए थे, परन्तु भाग्य से कोई रात का चौकीदार नहीं था।

'हँस हमारे उतर जाने पर ट्रक को मोड़ कर रास्ता रोक के खड़ा कर लो', राजू ने आदेश दिया, 'और यदि कोई आता दिखाई दे तो सिगनल के माफिक जोर-जोर से हार्न बजा देना।

'ठीक राजू' हँस बोला।

'अभी तक तो सब ठीक है,' राजू धीरे से बोला 'चलो देखते हैं क्या मेरा डिटेक्टर चीलों से ठीक स्थान पूछ लेगा'?

'अच्छा हो कि तुम समझा दो, तुम क्या कह रहे हो महिन्दर राजू के दो फावड़े तथा डिटैक्टर के साथ उतरता हुआ बोला।

'ये एक धातु का पता लगाने का यन्त्र है, 'राजू ने यन्त्र हाथ में ले बाग में आगे चलते हुए कहा, 'ये धरती में कई फुट नीचे दबी किसी भी धातु का पता लगा लेगा'।

'परन्तु 'चमकती आँख' धातु नहीं है, श्याम ने ऐतराज किया। "नहीं, परन्तु दोपहर को जब मैं अपने जूते का लेस बाँधने, फोटो खींचने के बाद बैठा था तो मैंने एक अठन्नी ठीक स्थान पर दबा दी ताकि स्थान का पता लग जाये। उस अठन्नी पर एक चील बनी हुई है, उसी चील से मैं स्थान पूछूँगा।"

"परन्तु तुमने फोटो ढाई बजे नहीं, सवा दो बजे ही ली थी', गस बोला जैसे वे अंधेरे में बाग के उस भाग की ओर बढ़ रहे थे जहाँ छाया पड़ती थी।

'मैंने पन्द्रह मिनट के समय का मारजिन रख लिया था, अब हम करीब-करीब उस स्थान पर आ गये हैं। राजू ने उत्तर दिया।

************ क्रमशः

गलती ढूढ़िये

उत्तर—चूज़े आठ दिखाये गये हैं परन्तु फूटे अंडे केवल सात हैं।